

आर.एन.आई. नं. एम.ए.आर./2000/2438
डाक पंजीयन संख्या म.प्र./भोपाल/44/2024-26
“चतुर्वेदी चन्द्रिका” मार्च 2024

स्थापना-माघ/शुक्ल पूर्णिमा सम्बत् 1947 सन् 1890

प्रकाशन : 03 तारीख
पृष्ठ संख्या : 36
मूल्य : 20/-



चतुर्वेदी चन्द्रिका



। वर्ष - 25 । अंक-03 । फाल्गुन-चैत्र मास । मार्च 2024

होली पर्व

हार्दिक -हार्दिक
की सभी को

शुभकामनाएं



श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा का मुखपत्र

हार्दिक शुभकामनाएं



भरत चतुर्वेदी
रिषड़ा,



भुवनेश चतुर्वेदी
गोंदिया



पंकज चतुर्वेदी
मुम्बई



अभयरज चतुर्वेदी
गुड़गांव



विशाल चतुर्वेदी
आगरा



प्रदीप चतुर्वेदी
गाजियाबाद



शशांक चतुर्वेदी
भोपाल

(संक्र. 2024/2142)



नयी सुबह लाती है, नयी राह दिखाती है
महिलाएं हैं अनमोल, जीवन रोशन करती हैं।
भविष्य को सजाती है, हर पल को हसीं बनाती है।
चुनौतियों का सामना निर्धार के साथ करती है।
इनमें हैं शक्ति परिवार को संभालने की,
माँ, बहन, बेटी, पत्नी और सहेली,
हर रिश्ते में है कहानी सच्चाई और प्यार की।

अंतरराष्ट्रीय महिला दिन पर,

उन्हें सलाम करते है,
जिनकी बदौलत दुनिया आगे चल रही है!
और आशा करते है की
हर महिला के सपने पूरे हो,
उनको खुशियाँ मिले,
उनकी राहों पे काटे नहीं,
फूल ही फूल हो!

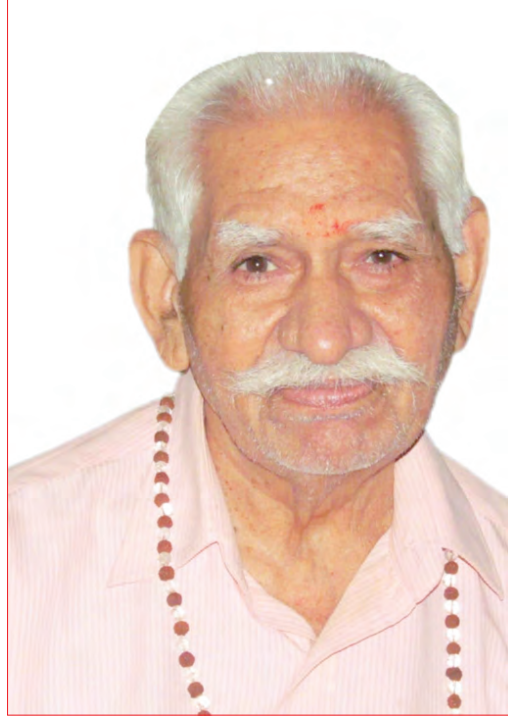


● दु. नं. 109, खान्देश मिल शॉपिंग कॉम्प्लेक्स, जलगांव. 425001 फोन : (0257) 2221095,
● 2221195, 2225195, 2228495. | ● rekha20032003@rediffmail.com

malhar.org

(र.क. 2024/3141)

विनम्र श्रद्धांजली



जन्म : 07/05/1934, निर्वाण : 03/02/2024

पूज्य स्व. श्री त्रिलोकीनाथ जी तिवारी

पुत्र स्व. श्री कृष्णदेव जी (चंदवार/ग्वालियर)

बिछुड़े कुछ इस अदा में ऋतु ही बदल गई, इक शख्स इस शहर को वीरान कर गया
कमर झुक जाती है बुढ़ापे में जिसकी सारी जवानी जिम्मेदारियों का बोझ ढोकर, खुशियों की इमारत खड़ी कर देता है
पिता अपने सपनों को खोकर। परिवार के चेहरे पर ये जो मुस्कान हंसती है वो पिता ही है जिसमें सबकी जान बसती
है। जब भी कमी खलती है आपकी, आपकी यादों से मुलाकात कर लेते हैं। अब आपसे मिलना मुमकिन भी नहीं है, इस
लिए आपकी तस्वीर से बात कर लेते हैं।

अश्रु पूर्ण श्रद्धांजलि

श्रद्धावन्त

भतीजे - बहू

श्री प्रेमनाथ जी

श्री श्रीरन्द्रनाथ - श्रीमती मनीषा

श्री टीकेन्द्र नाथ - श्रीमती मधु

एवं समस्त चंद्रवार परिवार

पुत्री - दामाद

श्रीमती स्वतंत्रलता - श्री राजीव जी

श्रीमती चंदना - श्री अजीत जी

श्रीमती दामा - श्री पुनीत जी

श्रीमती आभा - श्री अनुराग (टिंचू) जी

श्रीमती अंजली - श्री सौरभ जी

नाती - नातिन : अक्षत, कु. अनुष्का

पुत्र व पुत्र वधू

अजय कुमार तिवारी - श्रीमती रचना

निवास : जे-5, मधुवन एन्क्लेव बैंक कॉलोनी, अलकापुरी, ग्वालियर

मो. : 9425127616, 9479075794

गुरुजी परिवार द्वारा भावपूर्ण श्रद्धांजलि

जन्म
05/12/1958



निर्वाण
04/01/2024

स्व.श्रीमती ऊषा चतुर्वेदी (बेबी)

पत्नी - श्री राकेश चतुर्वेदी

पुत्रवधु - स्व.श्री रामरतन चतुर्वेदी
दिल्ली/फरौली

धरा से एक और सितारा दूर हुआ।

आसमान में एक तारा नूर हुआ ॥

शोकाकुल परिवार

जेठ - जिठानी

श्रीमती मीरा

श्री ऋषिकेश - मंजू

श्री लक्ष्मीपति - सुभाषिणी

श्रीमती शशि

श्री देवेन्द्र

नाती - नातिन

कुणाल, गौरी, समर्थ

नंदिनी, अंश, कृष्णा

प्रियंका, रिद्धि, शानू

काजू, आशिमा, भव्या

सुहानी, जिया, सिया

पुत्र - पुत्रवधु

ललित - श्रेया

धेवता-धेवती

मीठी, बनी

माधव, विभू

सानवी, मायरा

भतीजी - दामाद

माधुरी

इला - जलज

मोनिका - दिनकर

सोनिया - उमेश

शिखा - तनुज

रिचा - आदेश

रेनू - अजय

पुत्री - दामाद

श्वेता - उदित

सारिका - मयंक

सोनिका - हिमेन्द्र

राधिका

ननद - दामाद

श्रीमती रुकमणी

श्रीमती दया - महेश

भतीजे - बहु

दिवाकर - सारिका

यतीन्द्र - मनीषा

चन्द्रशेखर - पिकी

जयदीप - चांदनी

मनू - नैना

मनीष - मेघना

हेमन्त - रितू

हिमांशू - पूजा

भास्कर - सुगम

आर - ब्लॉक, 70 एफ, दिलशाद गार्डन,
दिल्ली-110095

मोबाइल: 9810062319, 8368404407

भावभीनी श्रद्धांजलि



जसवंत सिंह चतुर्वेदी 'श्रीनाथ'

5 जून 1936 – 31 जनवरी 2024 (होलीपुरा/कोलकाता/भोपाल)

सुपुत्र – स्व. रामस्वरूप चतुर्वेदी 'सर साहब'

शोकाकुल :-

पत्नी :- श्रीमती जगदम्बा चतुर्वेदी

अनुज भ्राता-बहु :- श्री रवीन्द्र नाथ – श्रीमती मृदुला

पुत्र – श्री जलज (मनीष), श्री खगेश (मोंटी)

पुत्रियाँ-दामाद :-

श्रीमती रश्मि – स्व. श्री निशंक (फिरोजाबाद)

श्रीमती मनीशा – श्री पवन चतुर्वेदी (भोपाल)

श्रीमती मीता – श्री संजय (कानपुर)

श्रीमती अदिती – श्री अम्बरीष चतुर्वेदी (सूरत)

श्रीमती रीता – श्री शैलेंद्र चतुर्वेदी, (आसाम)

पौत्र/पौत्री :- ध्रुव, नव्या

धेवता-बहु :- नमन-श्रीमती आकांक्षा, अर्पित, अनमोल

धेवती :- निकिता, मानवी, खुशी, अनुष्का, अम्बिका, मान्या, आरुषी

निवास :- जी.सी.-43 नारायण तल्ला रोड (पश्चिम), बाबूहट्टी, कोलकाता 700059

मोब. – 9830381167, 9831308755, 9830197340



अंक 03

मार्च 2024, वर्ष - 25

समापति

डॉ. प्रदीप चतुर्वेदी

president@chaturvedimahasabha.in

सचिव

श्री मुनीन्द्रनाथ चतुर्वेदी

मोबा. 098711-70559

कोषाध्यक्ष

श्री महेशचन्द्र चतुर्वेदी

मोबा. 09868875645

संपादक सलाहकार मंडल

डॉ. कुश चतुर्वेदी, इटावा

पूर्व संपादक

श्री दिलीप सिकन्दरपुरिया, लखनऊ

श्रीमती चित्रा दिलीप चतुर्वेदी, भोपाल

संपादक

शशांक चतुर्वेदी

पत्र व्यवहार का पता:

'चतुर्वेदी चंद्रिका', ई-8/जी2/255

गुलमोहर कॉलोनी, भोपाल

(मध्यप्रदेश)

मोबा. 9826086879

ई-मेल :

sampadak.chaturvedichandrika@gmail.com

वेबसाइट : www.chaturvedimahasabha.in

मासिक पत्रिका चतुर्वेदी चंद्रिका में प्रकाशित लेखकों में व्यक्ति विचार संबंधित लेखक के हैं। उनसे संपादक की सहमति होना आवश्यक नहीं है। सभी विवादों का निबटारा भोपाल अदालत में किया जायेगा।

चतुर्वेदी चन्द्रिका

॥ अपनों से अपनी बात ॥

8

संपादकीय

9

कार्यकारिणी बैठक

10

दिव्य अयोध्या-नव्य अयोध्या एक सुखद अहसास

12

कुछ दैविक क्षणों की अनुभूति

14

होली गायन परंपरागत रसिया

17

जोश-ए-जिंदादिली होली

18

होली रंगों का ही पर्व

19

होलिकोत्सव

20

गर्मियों का आनंद: ताजगी और स्वस्थ भोजन के लिए एक मार्गदर्शिका

21

गर्मियों में हृदय का ख्याल रखना जरूरी है.....

22

शाखा समाचार

25

समाज समाचार

26

बिछड़े स्वजन

26

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा

: Account No. :

1006238340

: IFSC Code :

CBIN0283533

: Branch :

Central Bank of India
Anand Vihar, Delhi

SHREE MATHUR CHATURVEDI



10292296444444

BHIM LPI

पत्रिका पाँच वर्षीय तथा महासभा

आजीवन सदस्यता शुल्क

1000 + 501 = 1501/-

महासभा सत्र + पत्रिका

वार्षिक सदस्यता शुल्क -

101 + 251 = 352/-

प्रकाशक : मुनीन्द्रनाथ चतुर्वेदी, श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा के लिए स्पेसिफिक ऑफसेट, भोपाल से मुद्रित, संपादक शशांक चतुर्वेदी

सभी सदस्यों को पत्रिका डाक द्वारा भेजी जाती है। पत्रिका न मिलने की दशा में पत्रिका कार्यालय की कोई जवाबदेही नहीं होगी।



॥ अपनों से अपनी बात ॥

● उषा चतुर्वेदी

Email : president@chaturvedimahasabha.in

कुलदेवी महाविद्या एवं देवी चर्चिका को नमन। सम्मानीय बन्धुवर/भगिनी,
पालागन

मंजिल पाना है तो बस जुनून चाहिए। अपने इरादे पाक होने चाहिए।

मंजिल तो क्या? आसमान भी नीचे आयेगा। बस अपने इरादे मजबूत होने चाहिए।

मैं समाज के सभी बाँधवों का आभार व्यक्त करती हूँ। अपना सहयोग एवं आशीर्वाद देकर मुझे जैसी अंकिचन को समाज के सर्वोच्च पद पर आसीन कराया।

मैं बड़े असमंजस में हूँ, अपनों से क्या अपनी बात करूँ, मुझसे अधिक जेष्ठ एवं अनुभवी व्यक्तित्व हमारे समाज का गौरव बढ़ा रहे हैं। चुनाव में प्रवास के दौरान मुझे बहुत से अमूल्य सुझाव प्राप्त हुए। महासभा की सदस्यता बढ़ाने के मेरे विचार को बल प्राप्त हुआ। महासभा की सदस्यता लेने के लिए अधिकांश बाँधव आतुर एवं उत्साही थे। मेरी भी प्राथमिकता यही है। समाज का प्रत्येक परिवार महासभा की आजीवन सदस्यता ग्रहण करें। जिससे महासभा को सुदृढ़ता प्राप्त हो। यह कार्य शाखा सभाओं एवं महासभा के पदाधिकारी एवं कार्यकारिणी सदस्यों के सहयोग से पूर्णता प्राप्त करें।

चतुर्वेदी चन्द्रिका महासभा का मुखपत्र है। यह भी आर्थिक रूप से पूर्ण रूप से आत्मनिर्भर हो तथा प्रत्येक परिवार तक पहुँचे जिससे समाज में गतिशीलता बनी रहे। इस कार्य हेतु भी चतुर्वेदी चन्द्रिका की सदस्यता बढ़ाने हेतु सभी से आग्रह है। पत्रिका के लिए विज्ञापन एवं प्रकाशन सामग्री आमंत्रित है। होली का रंगारंग त्यौहार की सभी को शुभकामनाएं। भदावर क्षेत्र के गाँव में होली के अवसर पर सामूहिक कार्यक्रम संपन्न होते हैं। समाज की परंपरागत फाग एवं रसिया का गायन एवं सहभोज आयोजित होते हैं। जिससे हमारी समाज की संस्कृति मजबूत होती है। होली की पूर्णिमा के दिन पुरा कन्हैरा में, दौज के दिन होलीपुरा में तीज के दिन तालगाँव में, तथा रंग पंचमी को तसोखर में उत्साह के साथ संपन्न होते हैं। फरौली तथा जहाँगीरपुर में भी कार्यक्रम आयोजित होता है। सभी गाँव के मूल निवासी अपने-अपने गाँव की होली में सम्मिलित होने शहरों से आते हैं। वह साधुवाद के पात्र हैं। हमारे गाँवों की पहचान बनी रहे वह आबाद रहे। आपके अमूल्य सुझावों की प्रतीक्षा रहेगी। आप अपने सुझाव लिखित रूप में भेजें ताकि उन पर विचार कर क्रियान्वयन का प्रयास किया जा सके।

आइये

हम सब मिलकर समाज एवं महासभा को सुदृढ़ता प्रदान करें।

संविधान में दी गई सुविधा के अनुसार अधिवेशन के आयोजन हेतु 5 सदस्यीय मंतिमंडल का गठन किया गया। जो अधिवेशन तक कार्य क्रियान्वयन करेगा।

जिसमें

- 1) नवनिर्वाचित सभापति श्रीमती ऊषा चतुर्वेदी
- 2) निवृत्तमान मंत्री श्री मुनीन्द्र नाथ चतुर्वेदी
- 3) निवृत्तमान श्री महेश चतुर्वेदी
- 4) शशांक चतुर्वेदी, भोपाल
- 5) श्री दिलीप सिकन्दरपुरिया, लखनऊ

जय समाज जय संगठन।

आप सभी लोगों के सहयोग की आकांक्षी

सहदेव गुरुजी को बधाई।

श्री शशिकांत जी (चंद्रपुर/आगरा), अशोक जी (कछपुरा/रिसड़ा/पूना) को समाज की ओर से अंशुपूर्ण श्रद्धांजलि



संपादकीय



हर्ष-उल्लास, उमंग-उत्साह, मौज-मस्ती रंग-गुलाल का माहौल चारों ओर वातावरण में बिखरा रहता है।

फाल्गुन माह में होली का त्योहार और महाशिवरात्रि का पावन पर्व का इंतजार पूरे साल रहता है। फाल्गुन में विजया और आमलकी एकादशी, अमावस्या, पूर्णिमा और प्रदोष व्रत भी आते हैं फाल्गुन माह के अंतिम दिन साल का पहला चंद्र ग्रहण भी लगने वाला है। चैत्र माह भगवान देवी माता की आराधना-उपासना का पर्व लेकर आता है।

हतोत्साहित होकर अवसादित हो जाना, हमारे जीवन में हमारी सबसे बड़ी पराजय का कारण है। जब समाज हमें हतोत्साहित करे, तब अवसाद की अवस्था से स्वयं को बचाकर स्वयं को प्रोत्साहित करना अनिवार्य है और इसके साथ-साथ अपने कार्यों के द्वारा ऐसा प्रत्युत्तर देने की तैयारी करने की आवश्यकता है, जो सभी को निरुत्तर कर सके। जीवन की सार्थकता तभी है, जब हम हतोत्साह की अवस्था में स्वयं को भीतर से प्रोत्साहित कर स्वयं को प्रमाणित करने में सक्षम बन सके।

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा महासभा के सभापति के चुनाव का कार्य संपूर्ण हो चुका है एवं सत्ता का हस्तांतरण डॉ. प्रदीप चतुर्वेदी, दिल्ली से श्रीमती उषा चतुर्वेदी, भोपाल को शांतिपूर्वक व सभी के सहयोग से सम्पूर्ण हुआ।

लोकतंत्र का इस महोत्सव में समाज में शांतिपूर्ण तरीके से सभी के सहयोग से संपन्न हुआ। इसमें सभी का सहयोग प्राप्त हुआ।

दामोदर इंटर कॉलेज होलीपुरा के 92 वर्ष के अवसर पर एक विशेषण का प्रकाशन किया गया जिसमें लोगों ने अपनी स्मृतियों को अलग-अलग शब्दों में रेखांकित किया गया इसी तरह यह अंक अविस्मरणीय बन गया।

सहदेव गुरुजी को सम्मान की बधाई। चरणस्पर्श। पालागन।

प्रिय गौरांशी, प्रिय दीपांशु, अपने ज्ञानार्जन के साथ मेरी सहयोगी प्रिय शिविका सहित सभी को बधाई।

श्री शशिकांत जी ददे आगरा एवं श्री अशोक जी कोलकाता पुणे के समय एक निधन पर हम चतुर्वेदी चंद्रिका परिवार की ओर से उन्हें विनम्र श्रद्धांजलि प्रस्तुत करते हैं।

कार्यकारिणी बैठक 28 जनवरी 2024 - विवेक विहार नोएडा

कार्यकारिणी बैठक का प्रारंभ विवेक विहार के फंक्शन हॉल में २८ जनवरी २०२४ क्रियान्वित किया गया। सर्व प्रथम सभी सम्मानित संरक्षकों श्रीमान भरत जी, श्री कमलेश पांडे जी, ले.जन. श्री विष्णु कांत जी, सभापति डॉ. प्रदीप चतुर्वेदी, उप सभापति श्री कैलाश जी, श्री महेशजी कोषाध्यक्ष तथा सभापति चुनाव संयोजक श्री गोपाल कृष्ण जी को मंचासीन कराया गया।

तत्पश्चात् कार्यक्रम का प्रारंभ जयपुर से पधारे वैद्य श्री अंशुमान जी (सह सचिव) द्वारा सस्वर गणेश तथा सरस्वती वंदना द्वारा किया गया। उस के उपरांत मंत्री मुनीन्द्र नाथ ने कानपुर में अति अल्प समय में बाबू ओंकार नाथ चतुर्वेदी धर्मशाला कानपुर में श्री विकास चतुर्वेदी @ चुन्ना भैया की टीम द्वारा १ अक्तूबर २०२३ आयोजित कार्यकारिणी बैठक को अनुमोदन के लिए वाचन कर प्रस्तुत किया। इस रिपोर्ट की सभी ने पृष्टि की।

इस अवसर पर, श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा के सभापति पद के चुनाव संयोजक, इलाहाबाद हाई कोर्ट के पूर्व रजिस्ट्रार तथा Railway Appellant Tribunal के अध्यक्ष रहे श्री गोपाल कृष्ण चतुर्वेदी जी द्वारा चुनाव में २७ जनवरी २०२४ को महासभा कार्यालय में हुई मतगणना के अनुसार उस का परिणाम घोषित निम्न प्रकार से किया :-

१. रजिस्टर्ड डाक द्वारा कुल प्रेषित मत पत्र - ३१४४
२. कार्यालय में २४ जनवरी २०२४ साँय ५ बजे तक प्राप्त मतपत्र - २३३३
३. कार्यालय में वापस आये मत पत्र-७४२
४. अमान्य मतपत्र - १२
५. २४ जनवरी २०२४ के बाद प्राप्त मत पत्र - १५
६. श्रीमती उषा चतुर्वेदी को प्राप्त मतपत्र- ११४३
७. श्री सुमन्त चतुर्वेदी को प्राप्त मतपत्र - ४३६

श्रीमती उषा चतुर्वेदी, श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा के सभापति पद के चुनाव में ७२% मत प्राप्त कर, ७०७ से वोटों से विजयी रही। श्री गोपाल कृष्ण जी ने इस चुनाव को अति शालीनता, धैर्य शांतिपूर्वक, स्वतंत्र तथा निष्पक्ष संपादित करवाने के लिए सभी का आभार व्यक्त किया। संविधान के नियमानुसार श्रीमती उषा जी को लेफ्ट. जन. श्री विष्णुकांत जी, संरक्षक ने सभापति पद के लिए सभा के संविधान तथा समाज के प्रति बिना किसी भेद भाव के सत्य निष्ठा से सेवा करने के शपथ दिलायी। तत्पश्चात् आज के कार्यक्रम का मुख्य कार्यसूची को अनुपादित करते हुए डॉ. प्रदीप चतुर्वेदी जी ने नव निर्वाचित सभापति श्रीमती उषा जी को पदभार



ग्रहण करने का आग्रह किया।

इस अवसर पर श्री ज्ञानेन्द्र जी, गाज़ियाबाद तथा प्रदीप जी @ संजू ने नव निर्वाचित सभापति तथा अन्य मंचासीन अतिथियों का माल्यार्पण कर स्वागत किया। डॉ. राकेश जी मथुरा ने श्री राम मंदिर के फ्रेम की फोटो तथा दुपट्टा भेंट की। श्री अंशुमान जी जयपुर ने पालागन का विशेष दुपट्टा भेंट किया। नव निर्वाचित सभापति का सम्मान कोटा से पधारे डॉ. मनीष जी, श्री शिव नारायण जी तथा कमलेश रावत जी, ग्वालियर से पधारे अभिषेक जी तथा करुणेश जी, कानपुर से पधारे श्री प्रवेश जी, जयपुर से पधारे अरुण जी, गोविंद जी, आगरा से पधारे श्री विशाल जी, भोपाल से पधारे श्री शशांक जी, दिल्ली एनसीआर की ओर से श्री मुनीन्द्र नाथ जी, नोएडा से पधारी श्रीमती मृदुला जी तथा बाह से पधारे श्री दिनेश जी आदि ने भी किया।

आदरणीय श्री गोपाल कृष्ण जी को सभापति पद को चुनाव

चतुर्वेदी चन्द्रिका

को अति शांतिपूर्वक, स्वतंत्र तथा निष्पक्ष करवाने के लिए कार्यकारिणी की ओर विशेष बधाई दी गई। आपने धन्यवाद ज्ञापित कराते हुए आग्रह किया कि महासभा की सदस्यता बढ़ाई जानी चाहिए। प्रस्ताव से सहमत होते हुए, इस संदर्भ में मंत्री मुनीन्द्र नाथ ने बताया की महासभा की सदस्यता के लिए एक नया फॉर्म तैयार किया जा रहा है, जिससे यह सुनिश्चित करने की कोशिश की जाएगी, कि नये तथा पुराने सभी सदस्य, असमंजस की स्थिति से अलग हटकर, महासभा के प्रति निष्ठा, सम्मान तथा अपनी प्रतिबद्धता के प्रति समर्पित रहने का निर्णय देंगे।

इस अवसर पर संरक्षक विष्णु कांत जी ने समाज में महिला के रूप में प्रथम सभापति चुने जाने को मातृ शक्ति के उदय का पर्याय बताया। समाज को वात्सल्य, करुणा, दया, प्रेम तथा दृढ़ता का एक सुदृढ़ समन्वय प्राप्त होगा। समाज सशक्त होकर आगे बढ़ेगा। आप ने ईश्वर का तथा सभी पूर्वजों का श्री रामलला प्राण प्रतिष्ठा समारोह में विशिष्ट अतिथि के रूप में सपत्नीक शामिल होने के लिए भी धन्यवाद किया। श्री कमलेश पांडे जी ने श्रीमती उषा जी के परिचय के संदर्भ में कहा कि आप ज़मीन से जुड़ी कार्यकर्ता रही है। आप महासभा से वर्षों से जुड़ी हुई है तथा उप सभापति भी दी कार्यकाल में रही है। आप ने अपनी एक संस्था के गुईया के माध्यम से महिलाएँ जोड़ने तथा अपने संस्कारों के प्रति प्रतिबद्धता के लिए कई कार्यक्रम किये। आप ने आगे कहा कि यह बात चुनाव में खूब चर्चा में रही कि इतनी बड़ी जनसंख्या में कुल तीन हजार के लगभग सदस्य ही चुनाव में भागीदारी करते हैं। यह बात ठीक है कि सदस्य संख्या भी कुछ बढ़नी चाहिए पर यह भी ठीक नहीं थी कि सभी वयस्क सदस्यता ले। भावना है कि हर कुल/परिवार से एक सदस्य बने। यह सदस्य प्रकार से स्पष्ट है जो खूब संपन्न हैं उनके लिए कुल क्रमागत अन्य के लिए आजीवन व संसाधन कम पर चुनाव में भागीदारी कि प्रबल इच्छा बालो के लिए सत्र सदस्यता हैं। अन्यथा सदस्यता कि अनिवार्यता महासभा की कार्य योजनाओं में सहयोग देने अथवा लेने के लिए हैं ही नहीं।

अतः आदर्श है कि परिवार/कुल से एक प्रतिनिधि रूप में सदस्य हो। श्री भरत जी संरक्षक ने बैठक को संबोधित करते हुए मंच पर विराजमान ईश्वर का नाम स्मरण कराने वाले श्री कैलाशजी, श्री महेश जी, श्री विष्णु कांत जी, श्री कमलेश जी को विशेष धन्यवाद करते हुए कहा कि यह सभी का सामूहिक आशीर्वाद है कि श्रीमती उषा जी सभापति के पद पर विजयी हुईं। सभी के सहयोग का आवाहन किया।

डॉ. प्रदीप जी ने अपने भाषण में अपने कार्यकाल की उपलब्धियों पर विस्तार से प्रकाश डाला तथा श्रीमती उषा जी को सभापति चुने जाने बधाई दी। डॉ. प्रदीप जी ने अपनी टीम के सभी

साथियों का तथा विशेष रूप से सभागार में उपस्थित श्री महेश जी, मंत्री श्री मुनीन्द्र नाथ, सह मंत्री श्री अंशुमान जी एवं श्री ज्ञानेन्द्र सिंह जी तथा चतुर्वेदी चन्द्रिका के संपादक श्री शशांक जी का विशेष आभार व्यक्त किया। श्रीमती उषा जी ने सभी को धन्यवाद देते हुए कहा कि मैं ने डॉ. प्रदीप जी से बहुत कुछ सीखा है। सभी को साथ लेकर चलूँगी। इस सम्मान के लिए भी समाज को धन्यवाद किया एक महिला को सभापति पद प्रस्थापित किया गया है। मंत्री मुनीन्द्र नाथ जी ने सभी आगंतकों का इस बैठक में दूर दूर से आने के लिए हार्दिक आभार व्यक्त किया। बैठक की



समाप्ति के पूर्व, मंत्री मुनीन्द्र नाथ ने प्रस्ताव किया तदनुसार विगत बैठक के बाद दिवंगत स्वजन को १ मिनट का मोन रखकर श्रद्धांजलि दी गई। सभा के कुशल प्रबंधन तथा समाज के ही केटरिंग का व्यस्तता करने वाले श्री गौरव चतुर्वेदी (तरसोखर / नोएडा) के द्वारा बनाये गये स्वादिष्ट चोबियायी भोजन - धोयी, भात, चना - बरी का झोर, खीर, गाजर हलवा आदि आदि के आनंद के लिए अतिथियों ने आभार व्यक्त किया। इस कार्यक्रम में विवेक विहार नोएडा में रह रहे २२ चतुर्वेदी परिवारों के आओ से कार्यकारिणी बैठक में पधारें सभी अतिथियों को आसमान धन्यवाद ज्ञापित किया गया।

विवरण प्रस्तुति : मुनीन्द्र नाथ चतुर्वेदी, मंत्री श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा, 9871170559

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा

अध्यक्ष **कोषाध्यक्ष** **महासचिव**
डॉ. प्रदीप चतुर्वेदी **महेश चन्द्र चतुर्वेदी** **मुनीन्द्रनाथ चतुर्वेदी**
 प्लेट नं. 4/2, ए.ए.ए. प्लेट, आर-76बी, दिलगाव गार्डन, ई-103, विवेक विहार, ANHO
 शाहजहाँ रोड, नई दिल्ली-110011 नई दिल्ली - 110095 सेक्टर 82, नोयडा (उ.प्र.) 201304
 मो. 9873395001 मो. 09868875645 मो. 9871170559



Election for the post of President, Shri Mathur Chaturvedi Mahasabha 2024

Election Result Sheet

Ballot counting for the election for the post of the President of Shri Mathur Chaturvedi was held at Shri Mathur Chaturvedi Mahasabha, Office 405-406, Chiranjeev Tower, Nehru Place, New Delhi on 28th January, 2024.

A. Position of Votes :

1. Total number of votes received (valid and invalid votes):
2. Total number of valid votes : 1579
3. Total number of invalid votes : 12
4. Total number of returned votes : 742
5. Late received votes: 15

B. Position of votes received in favours of each candidates

Name of candidate	Number of Votes
Usha Chaturvedi	1143
Sumant Chaturvedi	436

संरक्षक

डॉ. मनीष चतुर्वेदी, मुंबई
 पूर्व केबिनेट मंत्री, महा.
 श्री भरत चतुर्वेदी
 भोपाल (पूर्व समाप्ति)
 श्री राजेन्द्र आर. चतुर्वेदी
 मुंबई (पूर्व समाप्ति)
 तेजज, विष्णुकांत चतुर्वेदी
 नोयडा (उ.प्र.)

श्री कमलेश चंद पाण्डे
 रि. ई.पी.एफ. आयुक्त, नोएडा
 श्री मदन चतुर्वेदी
 रि. जज, कोलकाता

श्री वी.के. चतुर्वेदी, नोएडा
 रि. केबिनेट सचिव, भारत सरकार
 श्री विकास चतुर्वेदी
 कागपुर

संपाद्यक

श्री कैलाश चंद चतुर्वेदी
 कासगंज
 श्री मनोज चतुर्वेदी
 बैंगलुरु
 श्री विनोद चतुर्वेदी
 मुम्बई

संयुक्त सचिव

श्री भरत चतुर्वेदी
 रिण्डा (प.ब.)
 श्री ज्ञानेन्द्र चतुर्वेदी
 गाजियाबाद
 श्री आशुतोष चतुर्वेदी
 कागपुर
 श्री अशुमान चतुर्वेदी
 जयपुर

माथुर चतुर्वेदी
Usha Chaturvedi
Sumant Chaturvedi

कार्यालय : 405-406, चिरंजीव टॉवर, नेहरू प्लेस, नई दिल्ली - 110019

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा

अध्यक्ष **कोषाध्यक्ष** **महासचिव**
डॉ. प्रदीप चतुर्वेदी **महेश चन्द्र चतुर्वेदी** **मुनीन्द्रनाथ चतुर्वेदी**
 प्लेट नं. 4/2, ए.ए.ए. प्लेट, आर-76बी, दिलगाव गार्डन, ई-103, विवेक विहार, ANHO
 शाहजहाँ रोड, नई दिल्ली-110011 नई दिल्ली - 110095 सेक्टर 82, नोयडा (उ.प्र.) 201304
 मो. 9873395001 मो. 09868875645 मो. 9871170559



Smt. Usha Chaturvedi has won the election for the post of President of Shri Mathur Chaturvedi Mahasabha 2024 by the margin of 742 votes from his rival Shri Sumant Chaturvedi.

Dr. Satish Chaturvedi Sanrakshak, Member Election Committee		
Dr. Pradeep Chaturvedi President Member Election Committee	Munindra Nath Chaturvedi Secretary Member Election Committee	
Mahesh Chaturvedi Treasurer Member Election Committee	Gopal Krishna Chaturvedi Convener Member Election Committee	

माथुर चतुर्वेदी
Usha Chaturvedi
Gopal Krishna Chaturvedi

कार्यालय : 405-406, चिरंजीव टॉवर, नेहरू प्लेस, नई दिल्ली - 110019

दिव्य अयोध्या-नव्य अयोध्या एक सुखद अहसास

राकेश चतुर्वेदी (तरसोखर/लखनऊ)

आखिर अयोध्या धाम को माँ सीता को त्यागने के परिणाम स्वरूप मिले दरिद्रता के श्राप से मुक्ति मिल ही गई, राम लला अपने तिरपाल के बने निवास से अपने भव्य दिव्य और मनोहारी महल में भव्य धार्मिक अनुष्ठानों, और सामाजिक आयोजनों के बीच 22 जनवरी को प्राण प्रतिष्ठित हुए। 550 वर्ष पूर्व विदेशी आक्रान्ताओं द्वारा सनातन आस्था के प्रतीक राम जन्म स्थल को विध्वंस किया जाना, हमारी संस्कृति और धार्मिक भावनाओं नष्ट करने का कुत्सित षड्यंत्र था जिसके लिए धर्मालंबियों के साथ मिल कर राष्ट्र के जन मानस द्वारा समय समय पर विरोध स्वरूप युद्ध, आंदोलनों द्वारा अपनी प्राणों की बलि दी गई जिसकी संख्या लाखों में है। प्रयाग में धर्म संसद में चर्चा के उपरान्त चारों शंकराचार्यों के निर्देश पर अटल जी, आडवाणी जी, उमा भारती, साध्वी ऋतिम्बरा जी, कल्याण सिंह जी, अशोक सिंघल जी आदि ने विश्व हिंदू परिषद नेतृत्व में चले राम जन्म मुक्ति आंदोलन में शामिल रहे अनगिनत जन भागीदारी और न्यायपालिका द्वारा मंदिर निर्माण के कार्य का मार्ग प्रशस्त किया जाना, इस मार्ग में मील का पत्थर साबित हुआ। इस कार्य में विभाजनकारी राजनीति द्वारा तरह तरह के अवरोध पैदा किये गए परंतु राम के कार्य को अब रोका नहीं जा सकता था क्योंकि अब ये राम जी की स्वयं इच्छा थी कि उनके भक्त अब बालस्वरूप छवि को भरपूर निहार सकें।

*अवधपुरी प्रभु आवत जानी। भई सकल सोभा कै खानी॥

बहइ सुहावन त्रिविध समीरा। भइ सरजू अति निर्मल नीरा॥*

मेरी झोपड़ी के भाग आज खुल जाएंगे राम आयेगें.....

आज वास्तव में अयोध्या जाकर यही मससूस हुआ कि हम सबके भाग्य से ही ये परम सौभाग्य और पूर्व जन्म के पुण्यो का प्रताप ही था, जो हम सपत्नीक और अपने मित्रों के साथ इस पुण्य पावन धरती पर अपनी उपस्थिति दर्ज की, वाकई अयोध्या का बदला रूप जो भव्यता और दिव्यता लिए मनोहारी रूप में भक्तों को आकर्षित कर रही थी, वाहनों की पार्किंग बाई पास पर थी जो हनुमान गढ़ी, और राम मंदिर से करीब 2 km है और वहां से बने भक्ति मार्ग से चल कर ये यात्रा पूरी करनी थी, एक विशाल जनसमुदाय का ज्वार मंदिर की ओर अग्रसर हो रहा था इस मार्ग के प्रवेश द्वार में सुंदर भगवान की मूर्तियों ऊपर स्थापित थी, इस चौड़ी सड़क जो दोनों ओर विशाल खंबे जिसके ऊपर बड़ी बड़ी लाइट सुंदर दृश्य पैदा कर रही थी। प्रशासन द्वारा इस मार्ग पर फ्री



बस सेवा उपलब्ध कराई है परंतु भीड़ को देखते ये अपर्याप्त है कुछ रिकशा भी इस मार्ग पर चलते हैं पर वो नगण्य है अधिकांश को पैदल ही जाना पड़ता है।

प्रथम हनुमान गढ़ी जिनके दर्शन के बाद हनुमान जी की आज्ञा से राम लला के दर्शन करने की परंपरा है, जन सैलाब एक समुद्र के ज्वार की तरह अनियंत्रित 50 हजार के करीब जनसमूह जो भक्ति से सराबोर अपने हनुमान जी को निहार लेना चाहता था, परन्तु घोर अव्यवस्था और अनियंत्रित भीड़ हमारे दर्शन के मनोबल को तोड़ने को ही थी और हम बिना दर्शन वापस होने को ही हो रहे थे, तभी एक दुकानदार जो शायद ईश्वर द्वारा प्रेरित था ने सलाह दी की इस भीड़ में शायद आप शाम तक भी जा न सकें आप पीछे vip के लिए व्यवस्था है, चले जाएं शायद दर्शन हो जाएं वहां पर पुलिस वालों से अपनी उम्र का हवाला और काफी मान मनुल के बाद एक अधिकारी की कृपा से दर्शन लाभ मिला, मंदिर के पीठाधीश्वर महाराज जी जो मंदिर प्रांगण में विराजे थे का, आशीष प्राप्त किया

कुल मिला के इस व्यवस्था में सुधार किया जाना अपेक्षित है अन्यथा दुर्घटना के सम्भवना हो सकती है, हनुमान गढ़ी 12 बजे से 1 बजे बंद रहता है इस बीच भीड़ बड़ी संख्या में एकत्रित रहती है खैर पवन सुत के दर्शन के बाद हमारा रुख राम लाल के दर्शन की ओर था यह मंदिर भी 1 से 2 बजे तक बंद रहता है और भीड़ एक विशाल रूप ले लेती है।

राम लला के विशाल प्रांगण में भारी जन सैलाब उमड़ रहा था मानो पूरा भारत इस प्रांगण में अपनी संस्कृति और पहचान का एक दूसरे से आदान प्रदान कर रहा था, जगह जगह समूहों में भारत के प्रत्येक कोने से आये भारी संख्या में उपास्थि श्रद्धालु यह संदेश दे रहे थे कि हमारी भाषा, रंग रूप, खान पान अचार व्यवहार भले ही विविधता लिए हुए हों परंतु दिलों में देश और आत्मा में राम बसता है, यही विविधता में एकता का संदेश समस्त विश्व के लिए अनुकरणीय है। इस मंदिर में प्रवेश से पूर्व जूते, चप्पल और मोबाइल, और अन्य सामान लॉकर में जमा करना पड़ता है, जो भारी भीड़ के कारण करीब 1 से 2 घंटे का कार्य है अगर आप अपने इन सामानों को अपने वाहन में या बाहर किसी जानकार के यहां रख दें तो इस लंबी प्रक्रिया से बचा जा सकता है, इसके पश्चात लंबी लाइनों के द्वारा मंदिर जो करीब 1 km है की ओर आस्था से लबरेज रामलला की जय, जय सियाराम के जयकारों के बीच अनुशासित भाव में अपने आराध्य के दर्शन की अभिलाषा लिए मंदिर परिसर की ओर बढ़ चले आज सबकी चिरप्रतीक्षित मनोकामनाएं पूर्ण होने को थी, आगे चल कर पुरुष और महिलाओं की पंक्ति अलग हो गई मुझे यह भी महसूस हुआ कि पुरुषों की 2 पंक्ति में यदि दाहिनी पंक्ति में जाकर दर्शन किया जाए तो यह राम लला के दर्शन बिल्कुल सामने से होते हैं, आगे चल कर मंदिर का विराट सुंदर स्वरूप हमारे सामने था नागर शैली में निर्मित इस मंदिर में पांच गुम्बद जो बड़े से छोटे हुए क्रम में थे भारत के उत्तर भारत के प्राचीन मंदिर इसी शैली में निर्मित है।

मंदिर का प्रारंभ 32 सीढ़ी के द्वारा होता है इसके दोनों ओर हाथी हनुमान जी, वरुणदेव की मूर्ति का अद्भुत स्वरूप दिखता है हस्त निर्मित राजस्थानी पत्थरों द्वारा निर्मित बेजोड़ और अप्रतिम पत्थरों की तराशने का अद्भुत कारीगरी मन मोह लेने के लिए पर्याप्त है दीवारों पर समस्त देवी देवताओं के सुंदर उकेरे चित्र और फूल पत्तियों की बनावट और गर्भ ग्रह में उच्च मंडप पर पत्थरों पर दस्तकारी के बेमिसाल कारीगरी को देख कर लग रहा था कि हम शायद एक ऐसे दिव्यलोक में हैं, जिसका निर्माण मानव द्वारा संभव ही नहीं है साथ ही सोने से निर्मित 18 विशाल द्वार भव्यता को प्रदर्शित कर रहे थे ऐसा निर्माण प्रभु कृपा से ही हो सकता है, भक्तगण पंक्तियों में अनुशासित रूप से प्रभु की ओर अग्रसर ही रहे थे इसी प्रांगण में दाहिनी ओर सुमधुर और कर्णप्रिय भजनों का कार्यक्रम वातावरण को दिव्यता प्रदान कर रहा था और अब हम अपने आराध्य बालरूप में रामलला की काले पत्थर से कर्नाटक के योगीराज द्वारा जीवंत प्रतिमा जिसकी आंखें मानों बोलने को तैयार थी और बालरूप की मुस्कान स्तब्ध करने के लिए पर्याप्त थी और आंखें इस छवि निहारने से स्तब्ध और जड़ हो गईं मन भावुकता से भरा था, कुछ भक्त अश्रुपात कर रहे थे वाकई ये दुर्लभ और आविस्मर्णीय क्षण था जो हृदय पटल पर अमिट हो गया

व्यवस्था के अनुरूप रुकने का समय बहुत अल्प था लेकिन वाकई ये अनुभव चिरस्थाई हो गया। मंदिर के बाहर दान के कैम्प लगे थे इसमें भारी भीड़ अपने सहयोग को भगवान के चरणों में प्रेषित कर रही थी और निकाश द्वारा पर मंदिर प्रशासन द्वारा एक एक लड्डू का प्रसाद जो उज्जैन महाकाल के सौजन्य से वितरित किया जा रहा था कुछ लोग परिसर स्थल की रज भी ले जा रहे थे, चलने फिरने में असमर्थ लोगों के लिए व्हीलचेयर भी उपलब्ध है। अब हम अपने सामान लेकर राम पथ पर राम की पैड़ी और लता मंगेशकर चौक जो करीब 2 km है की ओर अग्रसर हो लिए भारी भीड़ का ज्वार इस सुंदर राम पथ पर अपनी आस्था और विस्वास को समेटे तृप्त मन से आगे बढ़ रहा था पूरे मार्ग पर मकान और दुकानें गेरुआ रंग से एक ही रंग के बोर्ड एक अदभुत मनोहारी दृश्य पैदा कर रहे थे, रास्ते में जगह जगह प्रचुर मात्रा में भंडारे और चाय का वितरण राम भक्तों द्वारा इस पुनीत यज्ञ में अपना योगदान किया जा रहा था और जगह जगह सांस्कृतिक विभाग द्वारा दर्जनों स्टेज पर लोक कलाकारों द्वारा अपने हुनर का प्रदर्शन भक्तों को आनंदित कर रहा था। मुख्य रूप से निर्मित राम पथ, भक्ति पथ, और ज्ञान पथ जो स्वर साम्रगी लाता मंगेशकर चौक पर जुड़ते हैं शायद इस परिकल्पना को धरातल पर उतारते प्रतीत होते हैं कि ज्ञान, भक्ति, संगीत के माध्यम से ही राम को प्राप्त किया जा सकता है।

अब हम लता चौक पर अपनी आमद दर्ज करा चुके जहां एक विशाल वीणा और संगीत वाद्य से निर्मित चौक सबके आकर्षण का केंद्र था, भारी भीड़ विभिन्न कोनों से सेल्फी और फोटो लेने में मशगूल थे ये अयोध्या का अत्यंत प्रमुख मनोहारी स्थान है जहां सुकून से प्रत्येक अपनी थकान को मिटा रहा था, इसके समीप ही राम पैड़ी जो सुंदर घाटों से सुसज्जित शानदार प्रकाश व्यवस्था किनारे सुंदर प्राचीन भवन सौर ऊर्जा युक्त प्रकाश व्यवस्था सरयू नदी से काट कर नहर द्वारा बहता स्वच्छ जलप्रवाह बहुत ही आनंद दायक है यहां आकर सारी थकान दूर हो गई अब सरयू आरती जो मुख्य रामघाट पर अपरान्ह 7 बजे होती है,

भक्ति मार्ग के द्वारा 2 km का सफर आवागमन के अल्प साधनों के रहते पैदल ही करना पड़ा टैक्सी by पास पर थी थक कर हम निढाल हो गए पैरों की शक्ति जबाब दे रही थी, परंतु जिस आनंद और परम संतुष्टि का आभाष हमें दिव्य दर्शनों हमें प्राप्त हुआ, वो सर्वोपरि था और उनकी सुखद यादों को समेटे हम लखनऊ की ओर प्रस्थान कर गए। इस अस्था के सैलाब का असर हमारी युवा पीढ़ी को अवश्य ही प्रेरणा प्रदान करेगी और भगवान राम के आदर्श प्रेम, त्याग, मर्यादा दायित्व स्नेह हर भारत वासी और सनातनी को अंतर्मन में धारण करने के लिए प्रेरित करेगी।

राम जी कृपा से सबका मंगल सुख, शांति का चहु ओर बास हो जय सिया राम

कुछ दैविक क्षणों की अनुभूति

- ले जनरल विष्णु कांत, नोएडा

पता नहीं क्यों अक्टूबर के पहले सप्ताह में मुझ से पूछा गया कि क्या मैं प्रस्तावित मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम जी की प्राण प्रतिष्ठा समारोह में आना चाहूंगा। एक अप्रत्याशित सुख का अनुभव हुआ, और मैंने अविलंब ही हां कह दी, और कहा कि इस परम सौभाग्य के लिए आपका बहुत बहुत आभार। फिर कुछ समय के बाद जब इस महत्वपूर्ण निमंत्रण का आभास मन में हुआ, तो एकदम ख्याल में आया कि मैंने अपनी जीवनसंगिनी के बारे में तो बात ही नहीं की। फिर से उन महानुभाव से सम्पर्क किया, तो उन्होंने कहा अभी तो निमंत्रण केवल स्वयं आपके लिए ही है। मैंने उनसे निवेदन किया कि हम दोनों जाना चाहेंगे तो उन्होंने कहा कि कोशिश करते हैं। कुछ समय पश्चात उनकी स्वीकृति आ गयी। एक अलग रोमांचकारी अनुभव होने लगा। लेकिन जब तक कोई औपचारिक रूप से कोई सूचना न मिले, हृदय को संतुष्टि नहीं थी। इसलिए प्रतीक्षा के अलावा और कोई चारा नहीं था। प्रतीक्षा की घड़ियां बहुत जल्द ही समाप्त हुईं। नवंबर के अंत में भारतीय परंपरा के अनुसार एक बहुत ही प्रेम भरा आमंत्रण पत्र मिला। मन प्रफुल्लित हो गया, ईश्वर को बार बार धन्यवाद देता रहा कि हम एक ऐतिहासिक क्षण के साक्षी बन पायेंगे। पूरी प्रक्रिया अपनी परंपराओं के अंतर्गत चलती रही, जिसमें औपचारिक निमंत्रण पत्र भी प्रत्यक्ष रूप से, राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट की तरफ से राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के पदाधिकारी घर पर देने आये। यह एक अद्वितीय अनुभव था जिसमें भारतीयता की

सुगंध कूट कूट कर मरी थी। सुरक्षा की दृष्टि से कुछ कार्यवाही पूरी भी की गई, जिसमें नवीनतम तकनीक का प्रयोग किया गया।

हृदय आल्हादित था, मन प्रफुल्लित था, फिर भी जब तक अयोध्या धाम न पहुंच जाए तब तक विश्वास नहीं था कि हम इन ऐतिहासिक क्षणों के साक्षी बन पायेंगे। 21 जनवरी को हम सुबह 10 बजे एयरपोर्ट के लिए चले, एक अलग ही उन्माद था जैसे बहुत बढ़ी सफलता मिल गयी हो। कोहरा बहुत घना था, बार बार मन में विचार आ रहा था कि कहीं फ्लाइट कैंसिल न हो जाए।

फ्लाइट दोपहर 1.30 बजे चलनी थी, लेकिन कोई सूचना नहीं थी। मन विचलित होने लगा, एयरइंडिया के अधिकारियों से बातचीत करने पर भी कोई संतोषजनक उत्तर नहीं मिला।

मन में विचार किया कि अगर फ्लाइट कैंसिल होती है, तो सड़क से निकलेंगे, रात में गाड़ी चला कर सुबह तक पहुंच ही जायेंगे। इस तरह मन को बहलाते रहे।

तभी करीब 3 बजे मालूम पड़ा कि फ्लाइट आ रही है। अत्यंत सुखद अनुभूति हुई। अंत में फ्लाइट 4 बजे उड़ी, ईश्वर को धन्यवाद देते हुए हम फ्लाइट में हनुमान चालीसा का पाठ करते रहे। तकरीबन 4.45 पर लखनऊ पहुंचे। एक मित्र ने गाड़ी का इंतजाम कर दिया था, सो तुरन्त एयरपोर्ट से ही सीधे अयोध्या धाम के लिए निकल पड़े। रास्ते में सब तरफ एक अलग ही उन्माद था, सड़क के दोनों तरफ भगवान प्रभु श्रीराम के आगमन के पोस्टर, हर आबादी की जगह भजन कीर्तन, कथा, भंडारा चल रहे थे, घरों में दीपक जल रहे थे। पूरा रास्ता बंदनवार, तोरण, स्वागत द्वार और गुब्बारों से सजा हुआ था। ऐसा लग रहा था कि एक नये युग में हम पहुंच गए हैं। 7 बजे के करीब हम डोगरा रेजीमेंटल सेंटर अयोध्या धाम पहुंच गए। जल्दी से तैयार होकर, कमांडेंट के निमंत्रण पर अधिकारी मेस गये। वहां पर सशस्त्र सेनाओं के 13 पूर्व सेनाध्यक्ष जीवन संगिनी संग और कुछ मेरे साथी आये हुए थे। सभी बहुत उत्साहित थे। हमारे सबसे वरिष्ठ पूर्व सेनाध्यक्ष जनरल वी. एन. शर्मा (93 वर्ष) भी अपनी बेटी के साथ आए हुए थे। सभी का एक ही मत था मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्री राम सभी के हैं, वो विश्व के हैं, मानव जाति के हैं, वो नैतिक और मानवीय मूल्यों के प्रतीक हैं, हम सब के प्रेरणास्रोत हैं। रात्रि भोज

के समय आदरणीय रामलाल जी अखिल भारतीय सम्पर्क प्रमुख इतनी व्यस्तता के बावजूद स्वयं सभी पूर्व सेनाध्यक्षों के स्वागत के लिए पधारे। यह एक अप्रत्याशित क्षण था और सभी को इसने मंत्रमुग्ध कर दिया, भारतीय परंपराओं का पूर्णतः पालन हो रहा था। सभी इस इस प्रेम भरे आतिथ्य से भावविभोर हो गये।

अगले दिन (22 जनवरी) अपने आप नींद जल्दी खुल गई, 5.30 बजे उठ गये। सुबह 9.15 पर हम सब एक जगह एकत्रित हुए और फिर पुलिस व सेना के एस्कार्ट के अंतर्गत हम सब पवित्र पुण्य धाम के लिए रवाना हुए। सारा रास्ता राममय था, सारा वातावरण जय श्री राम के जयकारों से गूंज रहा था। दोनों तरफ हजारों की संख्या में अयोध्या वासी हम सब का स्वागत कर रहे थे। 10 बजे हम पुण्य धाम पहुंचे। सभी प्रबंध बहुत ही सुचारूपूर्ण ढंग से सम्पूर्ण हो रहे थे। हम लोग गाड़ियों से उतर कर पैदल मुख्य द्वार की तरफ चलने लगे, उसके बाद हम लोग गोल्फकार्ट से सुरक्षा जांच स्थल पर पहुंचे। सुरक्षा जांच बिल्कुल नवीन तकनीक से बिना किसी असुविधा के हुई, कोई भी, Q नहीं। उसके बाद कार्यकर्ताओं के आदर सत्कार का एक अनुपम अनुभव हुआ, सभी हाथ जोड़कर, अयोध्या धाम में आपका स्वागत है कह रहे थे। सभी के ललाट पर चंदन का टीका लगाया गया और श्रीराम का अंगवस्त्र सभी को डालकर सम्मानित किया गया। फिर मुख्य द्वार की तरफ बढ़े। मुख्य द्वार की सुन्दरता और सजावट देख कर मन प्रसन्न हो गया, अंदर प्रस्थान करते हुए एक अलग अनुभूति हुई, जैसे कि हम प्रभु श्रीराम की नगरी में आ गये हैं। चरण पादुका उतारने पहुंचे तो एक अदभुत प्रसन्नता हुई, वहां स्वयंसेवक आपकी पादुकाएं स्वयं उतार रहे थे, ऐसा सेवाभाव कभी भी जीवन में देखने को नहीं मिला। फिर मुख्य प्रांगण में प्रवेश हुआ, जहां एक तरफ राष्ट्र के महान गायक सोनू निगम, शंकर महादेवन, अनुराधा पौडवाल, कविता पौडवाल (अनुराधा पौडवाल की पुत्री), अनुप जलोटा और अन्य प्रभु श्रीराम की प्रतिष्ठा में भजन गा रहे थे। प्रांगण में एक अत्यंत सुखद अहसास हुआ। वहां न कोई विशिष्ट, न कोई आम था। अमिताभ बच्चन, सचिन तेंदुलकर, मुकेश अंबानी, अक्षय खन्ना, रनवीर, आलिया भट्ट, कटरीना कैफ, माधुरी दीक्षित, विक्की कौशल, रोहित शेट्टी, रजनी कान्त, पूर्व प्रधानमंत्री देवगौड़ा, पूर्व मुख्यमंत्री कुमारस्वामी, चन्द्रबाबू नायडू, अरुण गोविल आयुष्मान खुराना, तीजन बाई, मुकेश अंबानी का परिवार, कुमारमंगलम बिड़ला, हेमा मालिनी, साध्वी रितम्बरा, उमा भारती और अन्य सभी जगह ढूंढ रहे थे और कार्यकर्ता उनकी मदद कर रहे थे। कोई नॉक-ड्रॉक नहीं, सभी बहुत उदारता के साथ, व्यवहार कर रहे थे। सभी के चहरों पर मुस्कान और एक शांति और सौहार्द का भाव था। एक अलग ही आनंद का पल, जहां सभी संतुष्ट थे, सभी उत्साहित थे। एक भी चेहरा नहीं मिला जिस के चेहरे पर मुस्कराहट नहीं थी। कार्यकर्ता सभी को बैठाने का



प्रबंध कर रहे। बहुत ही साफ कुर्सियां, गद्दी के साथ, कोई सोफा नहीं, सभी एक तरह की कुर्सियों पर बैठे। सारे मैदान पर कारपेट बिछा हुआ था, जिससे पैर ठंडे व गन्दे न हो। कार्यकर्ताओं ने बहुत ही सुन्दर ढंग से सभी को फलाहार के पैकेट दिये, थरमस में गर्म चाय, पानी की बोतल लाकर दे रहे थे। सभी प्रबंध बहुत ही सुन्दर थे, आदर सम्मान के भाव से थे। एक और अभूतपूर्व दृश्य का व्याख्यान करना जरूरी है, मौसम विभाग के अनुसार मौसम ठंडा और वातावरण कोहरे से ढका रहेगा ऐसा अनुमान था, लेकिन सूर्य भगवान निखर कर 10.30 बजे उभर आये और सभी को अपना आशीर्वाद दिया। भगवान प्रभु श्रीराम सूर्यवंशी राजा थे, तो सूर्य भगवान इस पावन पर्व पर अपना दर्शन क्यों न देते। यह संयोग था या कुछ और, मैं नहीं कह सकता लेकिन तथ्य है यह जरूर विश्वास से कह सकता हूं क्योंकि यह पल मैंने स्वयं अनुभव किये हैं। माननीय चंपतराय जी ने आकर सभी का स्वागत किया और श्रीराम जन्मभूमि मंदिर, ट्रस्ट और कार्यक्रम के बारे में जानकारी दी। महंत गोविंदगिरी महाराज ने वित्त प्रबंधन और खर्च के बारे में जानकारी दी। उन्होंने बताया कि पूरी पारदर्शिता बरती जा रही है। सभी लेन-देन आनलाइन है, कुछ भी कैश से नहीं है। अभी तक तकरीबन 900 करोड़ खर्च हो गए हैं और करीब 700 करोड़ प्रस्तावित है, कुछ और मंदिर, जैसे कि हनुमान जी, मां अहिल्या, माता शबरी इत्यादि के परकोटे के साथ बनने है। प्रथम तल और द्वितीय तल अभी और बनना है। माननीय चंपतराय जी ने, अभी तक जो भी काम हुआ है उसका विवरण दिया और प्रभु श्रीराम जी के मंदिर की पूरी व्याख्या कर हम सभी का ज्ञानवर्धन किया। समय समय पर कुछ कठिनाइयों की चर्चा भी की और कहा कि जितनी भी समस्याएं आईं उनका समाधान भी प्रभु श्रीराम ने स्वयं ही कर दिया।

11.30 बजे चंपतराय जी ने घोषणा की कि माननीय प्रधानमंत्री

जी मंदिर प्रांगण में प्रवेश कर चुके हैं और वह मंदिर प्रांगण में स्नान करेंगे और फिर पूजा के लिए आयेंगे। 12 बजे माननीय प्रधानमंत्री जी एक अलौकिक वेशभूषा में धीरे धीरे बहुत ही गरिमायुक्त ढंग से हमारे दाहिनी तरफ से आते हुए दिखे। चंपतराय जी ने बताया कि प्रधानमंत्री जी ने पैदल आना ही स्वीकार किया है। धीरे धीरे सीढ़ियां चढ़ते हुए माननीय प्रधानमंत्री जी प्राण प्रतिष्ठा के लिए गर्भग्रह की तरफ अग्रसित हो गये। चंपतराय जी ने पूरे दृश्य का विवरण दिया। उसके बाद हम सबको स्क्रीन पर अन्दर की पूजा का हाल मिला। इस दौरान सभी को घंटियों का वितरण हुआ। तभी 12.29 मिनट पर सभी खड़े हो गए और उस सदियों की प्रतीक्षा के अंत का भावविभोर होकर आनंद लेने लगे। घंटियां बजने लगीं और एक अलौकिक आनन्द का स्पंदन सभी ने महसूस किया।

फिर प्रभु श्रीराम की आरती हुई। सभी के दिलों में प्रसन्नता थी, सभी आल्हादित थे, भाव विभोर थे, खुशी के आंसू अनायास ही निकल पड़े। एक उत्कृष्ट कार्य का समापन हो गया था। एक अदभुत, अविस्मरणीय, अलौकिक, अकल्पनीय, अभूतपूर्व क्षण के, आप सबकी शुभकामनाओं से हम साक्षी बन पाये। उसके बाद सभी संतगण, मोहन भागवत जी, स्वामी नृत्य गोपाल दास जी, श्रीमती आनंदी बेन पटेल जी, योगी जी महंत गोविंद देव गिरी जी और प्रधानमंत्री जी पटल पर आये। सभी ने अपने विचार और भावनाओं का व्याख्यान किया। एक भावनात्मक प्रसंग का जरूर विवरण देना चाहता हूं। जब महंत गोविंदगिरी महाराज ने माननीय प्रधानमंत्री जी का व्रत तुडवाया, उसके बारे में बताना चाहता हूं। गोविंदगिरी महाराज जी ने कहा कि वैसे तो यह प्रक्रिया शहद और नींबू की कुछ बूंदें डालकर करते हैं, लेकिन मोदी जी ने यहां आते वक्त मुझ से कहा कि महंत जी क्या यह आप चरणामृत से कर सकते हैं। तो तुरंत व्यवस्था की गयी और चरणामृत लाकर, उन्होंने चम्मच से पिलाया तो मातृत्व प्रेम का अद्वितीय अनुभव हुआ।

बहुत ही भावुक क्षण था।

उसके बाद मोदी जी व अन्य महानुभाव कुबेर टीले की तरफ जटायु मंदिर में पूजा करने और कर्मवीरों का सम्मान करने चले गए। तत्पश्चात हम सबको प्रभु श्रीराम के प्रथम दर्शन का अवसर मिला। उससे पहले सभी को कार्यकर्ताओं ने भोजन प्रसाद वितरित किया।

दर्शन के लिए 8 पंक्तियों में जाना था, चार साधु संतों की और चार अन्य जन की। उन्माद इतना था, प्रसन्नता की कोई सीमा नहीं थी, सभी आल्हादित थे भाव विभोर थे। सभी की आंखों में खुशियों के आंसू थे। सभी चाह रहे थे कि जल्दी से जल्दी भगवान प्रभु श्रीराम के दर्शन हो। साधु संत आत्मविभोर थे, सभी जमीन को चूम रहे थे, दीवारों का स्पर्श कर रहे थे। स्वाभाविक भी था, इन्होंने अपना जीवन इसी संघर्ष में खपा दिया है, साध्वी रितम्बरा उमा भारती जी सब खुशी से रो रही थी। हम दोनों भी इसी उत्कृष्ट

वातावरण में, प्रेम, श्रद्धा और आस्था के सागर में गोते लगाते, लगाते प्रभु श्रीराम के सम्मुख कब आ गये, मालूम ही नहीं पडा। प्रभु श्रीराम की चल और अचल दोनों प्रतिमाओं को सामने पाकर हम गदगद थे आत्मविभोर थे, आल्हादित थे, प्रफुल्लित थे, नतमस्तक थे। इस भव्य दर्शन के बाद हम दोनों ने बाहर आकर बैठकर सभी बुजुर्गों, परिवार के सदस्यों, मित्र, साथी, भारतीय सेना, वीर बलिदानियों, चतुर्वेदी बंधुओं का स्मरण किया और प्रभु श्रीराम से सभी के कल्याण हेतु प्रार्थना की। और धीरे धीरे सीढ़ियों से उतरते हुए सोचते रहे कि क्या वाकई हम इस अविस्मरणीय क्षण के साक्षी थे। और उसके बाद श्री राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र न्यास और देवरहा बाबा जी न्यास की तरफ से एक उत्तम प्रसाद जिसमें सरयू का जल और पवित्र भूमि अयोध्या धाम की रज भी है, ग्रहण किया। प्रसाद वितरण की भी सारी व्यवस्था अनुकरणीय थी। आप सबकी शुभकामनाओं और बुजुर्गों के आशीर्वाद और प्रभु श्रीराम की कृपा से हम सौभाग्यशाली हैं कि इन अद्वितीय, अदभुत, अविस्मरणीय, अलौकिक, अकल्पनीय, नव्य, भव्य दर्शन के लाभार्थी बने।

सही में जैसा प्रधानमंत्री जी ने कहा एक नये युग की शुरुआत है, हम सब को भारत निर्माण में लगना है और राम राज्य की पुनरावृत्ति में अपना अतुलनीय योगदान देना है। अभी बहुत कुछ कहना है।

राम की कथा निरंतर है।

हरि अनन्त, हरि कथा अनन्त। लेकिन शब्दों की सीमा है, अपने भावों पर विराम देने से पहले मैं, श्री राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र न्यास और सभी कार्यकर्ताओं और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का हृदय की गहराइयों से आभार व्यक्त करता हूं जिन्होंने इस अतुल और अनुकरणीय कार्य के सफल आयोजन में बहुत ही महत्वपूर्ण योगदान दिया है। हम सब को त्याग, तपस्या, समर्पण भाव और राष्ट्र प्रेम की भावना का इन राष्ट्र प्रेमियों से सीखनी है। जो प्रेम, सौहार्द, सदभाव, आदर, सत्कार, उदारता, नम्रता और दायित्व के प्रति प्रतिबद्धता का उदाहरण प्रत्येक कार्यकर्ता ने दिया है वह अविश्वसनीय है, इसका प्रदर्शन देखकर अत्यंत प्रसन्नता हुई।

एक बात का और व्याख्यान करना चाहूंगा, यह पुलिस के व्यवहार की है। मैंने जीवन में कभी भी इतनी नम्रता से व्यवहार करने वाली, सदैव सहायता और सहयोग करने वाली और बहुत ही आदर सत्कार के भाव से बात करते पुलिसकर्मियों को नहीं देखा। मैं अचंभित हूं कि पुलिस इतना गंभीर दायित्व इतनी मर्यादा में रहकर कैसे कर पाई। सभी के मुख पर, जय श्री राम, और आप यहां से जायें और सहायता और सहयोग का भाव एक बहुत ही अद्वितीय अनुभव था। भगवान प्रभु श्रीराम का असर सब तरफ दिख रहा था। यह बहुत ही सराहनीय है।

जय जय श्री राम। हमारे राम आ गये हैं। जय भारत

होली गायन परंपरागत रसिया

- श्रीमती उषा चतुर्वेदी भोपाल

आ गया फागुन मास ढोलक की थाप मंजीरे और झांझ की मधुर ध्वनि के साथ होली गायन का मौसम। होली राग रंग का लोकप्रिय पर्व वसंत का संदेशवाहक भी है संगीत और रंग इसके प्रमुख अंग हैं। होली गायन की परंपरा बसंत पंचमी से प्राचीन काल से है बसंत पंचमी से फाग और धमार का गाना प्रारंभ हो जाता है। होली का त्योहार हमारे देश में भिन्न-भिन्न प्रदेशों में भिन्न-भिन्न प्रकार से मनाया जाता है। लेकिन मथुरा की पारंपरिक लठमार होली पूरे देश में प्रसिद्ध है। मथुरा तथा वृंदावन में 15 दिन तक होली का त्योहार मनाया जाता है साथ ही में होली का गायन भी। रसिया ब्रज क्षेत्र का लोकगीत है जिसमें भगवान कृष्ण तथा राधा एवं गोपियों के संग होली खेलने का वर्णन होता है रसिया में। हास्य एवं व्यंग का पुट भी देखने को मिलता है। रस की दृष्टि से यह श्रृंगार रस प्रधान होता है। भक्ति रस के रसिया भी उपलब्ध हैं। यथा ---

खेले मसाने में होली

वियोग रस भी रसिया में देखने को मिलता है,-- मैया कैसे लामें धीर प्राण दर्शन को भटक रहे

2= जब तैं धोको देकें गयो, काउ के संग नाहि खेली होरी।।

यदि हम वर्तमान समय की बात करें तो। रसिया का विकृत रूप आज हमें देखने और सुनने को मिलता है जिन्हें परिवार के साथ बैठकर सुना भी नहीं जा सकता।

आ जाओ सकता है। हमारे जो परंपरागत रसिया तथा होली हैं। उनको हम सुरक्षित रखें एवं साथ ही में उनका प्रचार-प्रसार भी हो हमारे समाज में होली गायन की। समृद्ध परंपरा है। चतुर्वेदी के सभी गांव में प्रत्येक राग में होली गाई जाती है। यथा मथुरा में रसिया, पुरा ताल गांव में लेद, होलीपुरा में धमार, चन्द्रपुर में टुडउआ, तरसोखर में जकड़ी, मैनपुरी में काफी राग में गायन होता है शास्त्री संगीत में 25 रागों में गायन होता है हमारी पारंपरिक होलियां प्राय सभी रागों में उपलब्ध है।

कुछ पारंपरिक रसिया जो प्राय गाँव में गाए जाते हैं निम्नलिखित हैं 1=

प्रमुख रसिया

मृगनैनी तेरो यार नवल रसिया

बड़ी-बड़ी अखियां ने नैनन कजरा,

तेरी. टेढ़ी चितवन मन बसिया।।

अतलस को याको लहंगा सौहे,

झिलमिल सारी मेरे मन बसिया।।

छोटी सी अंगुरिन मुंदरी सौहे,

याके बीच आरसी मन बसिया।।

बाँहबरा बाजूवंद सौहेयाके,

हियरे हार दिपत छतियाँ।।

रंग महल में सेज बिछाई,

याको लाल पलंग पंचरग तकिया।।

पुरुषोत्तम प्रभु देख विवस भये,

सबै छाँड बृज में बसिया।।

=2= नैननि में पिचकारी .दई, मोहि गारी दई

होरी खेली न जाय।।

तेरे लंगर लंगराई माँ सों कीन्ही,

केसरि कींच कपोलनि दीन्ही,

लै गुलाल ठाढो मृदु मुसकाय।।

नैक न कानि करत काहू की,

आँख बचावत बलदाऊ की,

पनघट सौँ घर लों बतराय।।

औचक कुचनि कुमकुमा मारे,

रंग सुरंग सीस पै डारै,

अंग लपटि हँसि हा हा खाय।।

होरी के दिनन माँ सौँ दूनों दूनों अटके,

सालिगराम कौन जाय हटकै,

यह ऊधम सुनि सासु रिसाय।।

3= रंग में होली कैसे खेलूंगी जा साँवरिया के संग।

कोरे कोरे कलश मँगाये। उनमें घोरो रंग

भर पिचकारी सम्मुख मारी। गोरी रह गयी दंग।

लहंगा तेरो घुमघुमारो। चोली है संतरंग।

बालम तुमारे बडे निखटू, तुम चलो हमारे संग।

ढोलक बाजे मंजीरा बाजे और बाजे मृदंग।

कान्हा जी की बंसी बाजे राधा जी के संग

रंग में होली कैसे खेलेगी जा साँवरिया के संग

जोश-ए-जिंदादिली होली

- सुचित्रा सिकंदरपुरिया, लखनऊ

एक बार कौन बनेगा करोड़पति कार्यक्रम में मथुरा के प्रतिभागी से बच्चन जी ने वहां के प्रसिद्ध चीजों के बाबत पूछा तो वो मुस्करा कर बोला ब्रज के तो चौबे और होली ही प्रसिद्ध है। अब ब्रज की होली तो अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्ध होने पर देशी विदेशी पर्यटक वहां पहुंचते हैं। हमारे यहां बसंत पंचमी से ही बदलती हवाओं के साथ ही मन रोमांचित हो गुनगुनाने लगता है, लगभग सवा सौ साल से कोलकाता में बल्देव जी के मंदिर में हमारी होली गायन की परंपरा के तहत विगत 14 फरवरी को बसंत पंचमी पर भी पुरुषों एवं महिलाओं द्वारा होली गायन का आयोजन किया गया। जिसमें कई प्रसिद्ध होलियों का गायन हुआ, जैसे.....(1)

मथुरा की कुंज गलिन में, होरी खेलि रहे नंदलाल। पूरब में राधा प्यारी, पश्चिम में कृष्ण मुरारी, उत्तर दक्खिन गोपी -गवाल। उन भरि पिचकारी मारी, नई सारी सुघर बिगारी, मुख मलि दियो अबीर गुलाल।। (2)

रसिया मति मारों दगन की चोट, रसिया होरी में, मेरे लग जायेगी।।.....

रसिक गोविंद वहीं जाय खेलों, जहां मिले तेरो जोट, भलाजी देखों मिले तुम्हारी जोट, रसिया मत मारो.....लग जायगी।

हमारे यहां होली धरणी पूर्णिमा पर होली-लकड़ी रखने के साथ ही घर घर ढोलक पर होली गायन सुनाई पड़ता है। परंपरागत रूप से फाल्गुन शुक्ल पक्ष फूलैरा दौज से चौदस तक आंगन में शाम को रंगोली बनाते थे, उस समय स्वतः ही होलियां गाई जाती थी, जैसे.... (1)

मै तो सोय रही सपने में, मोये रंग डारो नंदलाल। (2)

हो होरी आई, मोहन पर रंग डालो।।

फाल्गुन पूर्णिमा को गुजिया एवं अन्य पकवान बनाए जाते हैं, होली दहन से पहले महिलाएं चौक लगा कर सत्यनारायण कथा करने के बाद गुजिया एवं छोटी गोल पूडिया (पुचकड़िया जिनमें सोंठ व गुड़ भरा होता था) तथा सजाए गए फूलैरा (रंगोली) के गुलाल के साथ समूह में होली पूजन करती हैं। स्वाभाविक रूप से होली गायन से रात्रि जागरण ही होता था..... (1)

भली भई यह हो होरी आई, घर आये घनश्यामा। धनि तेरो भाग सुहाग लड़ैती, तो सम और न वामा।। काजर दें, मुख मांडि हरद सौ, राधे पूरन कामा। सूरज प्रभु की इच्छा पूजवत, सीता मिली श्री रामा।। भली भई..... (2)

काहे गुलाल सैया हम पै डालो, रंग से चटक अंग रंग ही हमारो।। आवो पिया मुख देखो सैज पै, मुख जैसे चंद्र जौवन जैसे तारो।।

काहे गुलाल सैया हम.....

सिसकि सिसकि मैरो मन बस करि लीनो, अब क्यों न अंचरा उधारो।। काहे गुलाल.....।

इसी दिन चौक पर नये घड़ों में पानी भर कर रखा जाता था। आंगन में ही खटिया पर बिस्तर लगाते थे, माना जाता था कि यदि होली रात्रि में आंगन में नहीं सोते तो चैत में बाहर नहीं सो सकते।

मैनपुरी में भी होली पर मन-प्राण भावन गायन और हुड़ंग मचाया जाता है। रंग भरनी एकादशी को भगवान कृष्ण श्यामसुंदर मंदिर चौथियाना से गणेशगुर्ज मंदिर मिश्राना होलिकात्सव मनाने जाते हैं, इसके साथ ही सभी मंदिरों में गुलाल युक्त होली गायन शुरू होता है पं..... (1)

रंग डारोगी वाही पै जाने तोरयो है धनुक, सुनि आई री आजु नई होरी की भनक।। करि श्रृंगार चली सब बनिता, कोऊ अबीर कोऊ अरगजा मलत। खेलत राम जानकी संग, उत आवत पिचकारी की सनक।। एक कहै रंग डारो लखन पै, एक कहै या खिलाड़ी पै तनक।। एक उमंगि मुख मलत लाल को, एक हंसै दो तारी की ठनक।।

रंग डारो वाही पै..... (2)

चलि वृषभान किशोरी, श्याम संग खेलन होरी। कंचन कलश रंग केशरि को, ले गुलाल भरि झौरी।।

करि मुठभेड़ घेरि चहुं दिसि तें, बसन लेहु सब छोरी, मलौ मुख कुमकुम रोरी।।

चलि वृषभान किशोरी.....

फिर पूनो को महिलाएं होली स्थान पर गायन करते हुए पूजन करती हैं, चैत कृष्ण पक्ष पड़वा की सुबह सभी महिला एवं पुरुष सज-धज कर होली खेलने में व्यस्त हो जाते हैं, मैनपुरी में मिश्राना चौथियाना के बाघा अटारी बार्डर पर बड़ी बड़ी पीतल की पिचकारियों से तेज धार से दोनों ओर से रंग डारो जाता है, यही होली रंगों का मुकाबला मैगजीन नाम से जग प्रसिद्ध है। वहां दूज को कंस मेला लगता है। पड़वा की दोपहर में ठाकुर जी वापस श्यामसुंदर मंदिर पहुंचने के साथ रंग खेलना बंद हो जाता है।

लखनऊ भी अब पांच सौ पौरों के साथ चौबों का अच्छा गढ़ बन गया है, यहां के समाज का आपसी सहयोग, सहमति, समर्थन एवं व्यवहार काफी चर्चित है, यहां भी बसंत पंचमी से चैत्र अष्टमी तक सामूहिक होली गायन होता रहता है, पड़वा को लखनऊ में अपने अपने ग्रुप में शामिल होकर एक दूसरे के घर जाते हैं, वहां जोरदार रंगों के साथ होली गायन भी होता है..... (1)

काहे गुलाल सैया हम पे डारौ, रंग से चटक अंग रंग ही हमारौ।
आवौ पिया मुख देखौ सैज पै, मुख जैसे चंद्र जौवन जैसे तारौ।।

काहे गुलाल सैया..... (2)

जाउं बलम जहां रैन गंवाई। ना मै खेलूं न खेलन दूंगी, तुम्हारी
दूंगी दुहाई। पांव पलंगवा पै धरने न दूंगी, लूंगी मुचलका
कराई, बलम तुम हो हरजाई।। ना मोहों बोलों ना घूँघट खोलों, ना
छुओ नरम कलाई। मानों तो मानो नहिं कह दूँ बबा सों, सब कलाई
खुल जाई, रात हमें नींद न आई। जाउं बलम.....

लखनऊ मंडल का होलिकात्सव समारोह समाज में काफी
चर्चित एवं लोकप्रिय है। भोपाल में भी होली सौहार्दपूर्ण वातावरण
में मनाई जाती है, लेकिन रंग पंचमी विशेष रूप होली गायन के
साथ मनाई जाती है..... (1)

मेरी अंखियन भरत गुलाल रसिया ना मानें। अछन अछन पग

धरे अलबेलों, निरखि नवेली बाल।। नयौ रे फाग जौवन
गरवीलौ, करत अटपटे ख्याल। जाहु चले बलिहार बिहारी, भुजबल
होत निहाल।।

मेरी अंखियन भरत गुलाल..... (2)

ब्रजराज आज खेलत बसंत, जिहि अगम निगम गावे अनंत। सब
गोरस मटुकी शीश धारि, बनि आई बनि करिकें सिंगार। लै संग सखा
ब्रजपति कुमार, सब पौटि लई बनि गोप नारि।।

ब्रजराज आज खेलत.....

चैत्र कृष्ण पक्ष अष्टमी को बासौरा के साथ देवी पूजन के साथ
ही होली त्योहार पूर्ण मानने की परंपरा है। FC

चैत्र शुक्ल पक्ष प्रतिपदा (9 अप्रैल 24) से नवरात्रि एवं
नवसंवत्सर 2081 की शुरूआत होगी।। आप सभी को नवसंवत्सर
2081 विक्रम एवं रामनवमी (17 अप्रैल 24) की हार्दिक शुभकामनाएं।

होली रंगों का ही पर्व

- राकेश चतुर्वेदी, मथुरा

होली रंगों का ही पर्व है इसमें कोई रंगों की फुहार से आनन्द
होता है तो कोई होली गायकी के रंग बिखेरता है तो कोई हंसी
ठिठोली की पिचकारी से उल्लासित होता नजर आता है। बसन्त
पंचमी के दिन से ही होली गायन की बैठकें मास पर्यन्त जारी रहती
हैं जिनमें ढोलक की थाप और मंजीरा की खनक के मध्य -

रंग डारौगी वाहीं पर जाने तोरयौ है धनुक, सुनि आई आजु
नई होरी की भनक।।

करि श्रृंगार चली सब बनिता, कोऊ अबीर कोऊ अतर मलत,
खेलत राम जानकी के संग, उत आवत पिचकारी की सनक।
एक कहे रंग डालो लखन पै, एक कहे या खिड़की पै तनक,
एक उमंगे मुख मलत लाल कौ, एक हंसै दे तारी की ठनक।
जो आनंद मचौ मिथिलापुर, शेष शारदा बरनि ना सकत,
तुलसीदास धनि धनि राजा दशरथ, धन्य धन्य मिथिलेश जनक।।
बसन्त का आगमन हो गया है होरी की भनक सुनकर आई है
और होली के उत्साह में अभी से ही सराबोर है। एक अन्य होली में
गायक तान छेड़ते हैं -

रंगीले रंग महल में, खेलि रहे दोऊ फाग। दशरथ - सुत और
जनक - नंदिनी, उमंगि उमंगि अनुराग।।

भीजि गई सिय की सिर सारी, नवल लाल को पाग।

मधुर अली, तून तोरि विलोकत, सरसत सरस सुहाग।।

और जब होली आ गई है तो -

मथुरा की कुंज गलिन में, होली खेलि रहे नंदलाल।

पूरब में राधा प्यारी, पश्चिम में कृष्ण मुरारी, उत्तर दक्षिण गोपी
ग्वाल।।

उन भरि पिचकारी मारी, नई साड़ी सुधर बिगारी, मुख मलि दियौ
अबीर गुलाल।

नए रंग के हौद भराये, छकरन में अबीर लदाए, यहां मचौ
नवेलौ फाग।।

होली तो बरजोरी की है। आपसी राग द्वेष सब भुलाकर आपसी
भाईचारे का ही पर्व होली है। बरसाने की होली का रसखान कुछ
यों वर्णन करते हैं -

चलो देखिए बरसाना, जहां मची रंगीली होरी।

निकसीं हैं भवन भवन तें, हाथों गुलाल रोरी। मनुहार कैसी
झलकै, मानो प्रेम रंग बोरी। अबीर गुलाल की घुमड़नु में, पकड़े हैं
नंदलाल।।

फगुआ हमारी दीजै, हंसि मांगती बृजबाला।

बाजै रबाव भेरी, ढप ताल और मृदंगा।

दीनार बीन बाजै, महुअरि मुहचंग उपंगा।

नंद नंदन श्री गिरधारी, बृजभानु की दुलारी। रसखान खेले
होली, चिरजीव रहै यह जोरी।।

होली गायकी की इन बैठकों में सुर ताल की ये फुहारें अमिट
रंग में रंग देती हैं और फिर वर्ष भर इसी की याद में होली का
इन्तजार करते हैं। गायक भी गाते हैं कि -

होली चाली मेरे यार, बरस दिन कौं।

श्री वंशीवट और, यमुना तट।

कुंज गली रंग, छिरकन कौं।

अब दुर्लभ है, मिलन बिहारी

मुख देखन अब, लोकन कौं।।

होलिकोत्सव

- भरत चतुर्वेदी 'अचल'

बसंत पंचमी के दिन से ही प्रकृति में नवीन परिवर्तन दृष्टिगत होता है। शीत का प्रकोप जहां धीरे-धीरे कम होने लगता है वहीं पेड़ पौधों से पुराने पत्ते झड़ने लगते हैं। कुल मिलाकर प्रकृति और जन मानस में एक नवीन उल्लास का संचार होने लगता है क्योंकि होली पर्व के आगमन की आहट दस्तक दे रही है। बसन्त पंचमी से होली गायकी का आरम्भ होकर माघ मास की पूर्णिमा के दिन से होली रखना आरम्भ हो जाता है जिसे होली धरनी पूनो कहते हैं। होली का त्योहार मूलतः हास परिहास, उत्साह उमंग, व्यंग विनोद तथा आपसी भाई चारे का पर्व है। रंग गुलाल, गायन वादन और नई फसल इसके अंग हैं।

बसन्त पंचमी से ही होली गायन की बैठकें आरम्भ हो जाती हैं। इनमें होलीपुरा, मैनपुरी, कलकत्ता, वृन्दावन के टटिया स्थान एवं मथुरा में ऐसे आयोजन उल्लेखनीय हैं। वृन्दावन के टटिया स्थान पर संगीत संध्या पर बसन्त के पद सुनकर मन आनन्दित हो उठता है। श्री स्वामी रसिक देव जू का पद -

श्री रसिक बिहारी प्यारी के संग रस भीनें खेलत बसन्त।
रस भीनें सब अंग बिराजत सोभा कौ नहिं अंत॥
रस सौं भीनी तनसुख सारी छबि की उठति तरंग।
रस भीनी सब सखीं बिराजति सब अंग भरे रस रंग॥
रस की तान लेति नाना गति उपजत तान तरंग।
रस सौं भीनी सब द्रुम बेली सौरभ उड़त सुरंग॥
रस भीनें सब पंछी बोलत रंग जी करत तरंग।
रस सौं भीनी श्री वृन्दावन रस भरे भामिनी कंत॥
श्री रसिक बिहारी रस बस कीनें सोभा कौ नहिं अंत॥
होली में धमार गायकी अपने समाज की सुप्रसिद्ध है।
खेलत फाग बिहारी कुंजन वन॥

ब्रह्मलोक बैकुण्ठ सराहत गोकुल पैड़ा न्यारी॥
निर्गुण ब्रह्म सगुण द्वै आये सुरनर मुनि रहत निहारी॥
धन जीवन धन भाग्य सखिन के संग लिए प्यारे प्यारी॥
गहि के मलै गुलाल कपोलन हसि हसि दै दै तारी॥
गांवें गुदर प्रभु चरित मनोहर अगम निगम कहि हारी॥
फागुन का महीना आनेवाला है अपने उल्लास को व्यक्त करती हुई होली देखिए -

सखी मोहि फागुन मास सुहावै।
हरि आवैं सब ग्वालिन लावैं, प्रेम राग बगरावैं॥
इन्द्र अप्सरा नाचें गावैं, भेद कों आंच लगावैं॥
सब चलियो ब्रजराज दुलारे, जाय के फाग मचावैं॥

होली गायन की ऐसी बैठकें मथुरा वृन्दावन और भदावर में नित होती रहती हैं जिसका रसास्वादन रसिक जन करते हैं। होली का पर्व जहां भक्त प्रह्लाद और हिरण्यकश्यप की बहन होलिका दहन के स्मृति का पर्व है वहीं भगवान शंकर ने काम देव को भस्म करने से होलिकोत्सव आरम्भ हुआ। धार्मिक दृष्टि से होली की दो कथाएं प्रचलित हैं तथा सामाजिक रूप में भी होली का विशेष महत्व है। खेतों में लहलहाती फसल देखकर कृषक आनन्दित हो उठता है इसीलिए होली के एक दिन पहले नवीन अन्न गेहूं और चना की बालियों को गन्ने के शिरे से बांधकर होलिका में भूनकर प्रसाद रूप में ग्रहण करने की परम्परा है। इसी अन्न को होला कहते हैं सम्भवतः इसी से इसे होलिकोत्सव कहा जाता है। होली प्रेम का त्योहार है कहा जाता है कि आज के दिन सभी अपने मनो मालिन्य को हवन कर एक दूसरे से प्रेम पूर्वक रंग - गुलाल लगाकर गले मिलते हैं इसलिए होली पर अधिकांशतः राधाकृष्ण के प्रेम पद गाते हैं। मथुरा में फाल्गुन मास के शुक्ल पक्ष की अष्टमी से पूर्णिमा (होली) तक आठ दिन होलिकोत्सव की बहार रहती है जिसे होलाष्टक कहते हैं। होली हास परिहास उत्साह व उमंग का ही तो पर्व है। उदाहरण के लिए कलकत्ता के बड़ाबाजार में रास्ते में पैसा चिपकाकर, नोटों का बण्डल डालकर उठाने वाले का खूब परिहास किया जाता था।

मकान के ऊपर से रस्सी से क्लिप बांधकर कंधे से गमछा खींचना या दो कुर्सी रखकर फोटो खींचने के बहाने एक कुर्सी हटाकर गिरा देना आज कपोल कल्पित कथाओं के समान हो गया है। होली में पहले जैसा उत्साह, उमंग, हास, परिहास एवं व्यंग विनोद कहां आपसी भाई चारा भी नदारत नजर आता है। होली गायन की बैठकों में उपस्थिति नगण्य हो चली है। रंग और गुलाल की जगह स्प्रे आदि लेते जा रहे हैं। भंग की तरंग की जगह मादक पदार्थों का सेवन होली के मूल स्वरूप को नष्ट कर रहा है। भंग की महिमा करते हुए किसी ने लिखा है -

भांग छान लें बावरे, अंखियां कर लें लाल।

भजन कर लें सांवरे, झक मारेगा काल॥

सुप्रसिद्ध साहित्यकार डॉ० प्रेमशंकर त्रिपाठी ने होली पर्व का वर्णन सहज और सुन्दर शब्दों में किया है -

फागुनी बयार में, हास्य की फुहार में, रंगों की धार में होलिका बहार है।
ढोलक की गमक में, युवकों की चहक में, वृद्धों की बहक में, भंग का निखार है॥
प्रकृति के विलास में, वासंती रास में, ऋतु के उल्लास में, फागुनी फुहार है।
द्वेष के विनाश में, प्रेम के प्रकाश में, ऐक्य के विकास में, स्नेह का प्रसार है॥

होरी बृज की

भरत चतुर्वेदी भोपाल

संरक्षक श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा।

माथुर चतुर्वेदी समाज में होरी गायन की एक समृद्ध परम्परा है। बदलते समय में जब लोगों का आचार विचार, रहन-सहन, खानपान और पोशाक सभी में तेजी से परिवर्तन आया है। इसी औद्योगीकरण का प्रभाव हमारे समाज पर भी पड़ा है। जिसकी वजह से दस बारह नगरों में एवं 40 गांव में सिमटा हमारा समाज संपूर्ण देश के हिस्से में अपनी उपस्थिति का अहसास कर रहा है। हम संपूर्ण देश में अपनी उपस्थिति तो दर्ज करा रहे हैं। लेकिन दूसरी तरफ हम अपनी होरी गायन की समृद्ध परम्परा को

भी सीमित कर रहे हैं। हमारी इस सांस्कृतिक धरोहर को पुनर्जीवित करने एवं बढ़ाने का कार्य यदि हो रहा है तो अभी मदावर के गांव में इस पुनीत कार्य के लिये सतत प्रयास जारी है। मदावर के प्रमुख गांव में पूर्णिमा के दिन पुरा कन्हेरा, दौज के दिन होलीपुरा, तीजके दिन तालगांव तथा पंचमी के दिन तरसोघर में सामूहिक होली का गायन होता है। प्रत्येक गांव में सभी मदावर क्षेत्र के गांव के बन्धुओं की उपस्थिति रहती है। फरोली और जहांगीरपुर में भी कार्यक्रम प्रारंभ हुए हैं।

होली का पर्व हो और बृज क्षेत्र में भाँग एवं ठंडाई न हो सम्भव नहीं हो सकता। भाँग की तरंग में मजूम और मस्ती भर देती है। तो प्रस्तुत हैं होरी भाँग की

(1) काफ़ी राग में

तुम्हें भंगिया का पीना सिखाएंगे हम।

आओ मेरी प्यारी करो शैलदारी, इस भंग में की है अजब वहारी।

चौबे को लाल बने डोले छमाछम

तुम्हें भंगिया का-----

मिर्ची बदामों के डाले मसाले, पडना नहीं किसी भंगडी के पाले
लगे चार रगडे बडे दूरी दम।

तुम्हें भंगिया का-----

एक दिन भंगिया तू पीजा हमारी

सोने न पाये जगे रेनि सारी

डटके लडेंगे हटके न हम

तुम्हें भंगिया पीना सिखाएंगे हम

(2) सुखइया (लेढ)

श्री राम सजीवन बूटी प्रेम से शंकर ने घोटी मोटी-मोटी
विश्वामित्र वशिष्ठ सप्त ऋषि वाल्मीकि तुलसी ने घोटी मोटी
मोटी

नारद भारी बीच सभा में

भक्त प्रह्लाद की तुम्हें याद हो ना याद हो।

हनुमत रस की सब छानि छानि के

पी गये सब जानि जानि के

श्री राम सजीवन बूटी-----

(3) ठडउआ

मेरे भोला डारे गोला पड़ो बगिया में

ऐ हॉ मस्त पडो बगिया मे, मेरा भोला डारे गोला।

कै किरिया गांजो बोयो गांजो बोयो

और कै में बइदयी भांग

मस्त पडो बगिया में --मेरे भोला डारे गोला

नौ किरिया गांजो बोयो गांजो बोयो

ओरू दस में बइदई भांग

मस्त पडो बगिया में

मेरे भोला डारे गोला मस्त पडो बगिया में।

गर्मियों का आनंद: ताजगी और स्वस्थ भोजन के लिए एक मार्गदर्शिका

- शिविका चतुर्वेदी, भोपाल

जैसे-जैसे तापमान बढ़ता है और सूरज चमकता है, गर्मी के महीनों के दौरान ऊर्जावान और हाइड्रेटेड रहने के लिए स्वस्थ और पौष्टिक आहार अपनाना आवश्यक हो जाता है। तरोताजा और स्वस्थ जीवन शैली के लिए क्या खाना चाहिए, इसके बारे में यहां एक मार्गदर्शिका दी गई है:

1. जल-युक्त खाद्य पदार्थों से हाइड्रेट करें

चिलचिलाती तापमान में, हाइड्रेटेड रहना सर्वोपरि है। अपने आहार में तरबूज, खीरा और संतरे जैसे पानी से भरपूर खाद्य पदार्थ शामिल करें। ये फल न केवल आपकी प्यास बुझाते हैं बल्कि आवश्यक विटामिन और खनिज भी प्रदान करते हैं।

2. ठंडी हरी पत्तेदार सब्जियाँ

अपने भोजन में पालक, केल और सलाद जैसी हरी पत्तेदार सब्जियाँ शामिल करें। एंटीऑक्सिडेंट और पोषक तत्वों से भरपूर, ये साग जलयोजन को बढ़ावा देते हैं और समग्र कल्याण में योगदान करते हैं।

3. विटामिन सी के लिए खट्टे फल

नींबू, संतरे और अंगूर जैसे खट्टे फल न केवल ताजगी देने वाले होते हैं बल्कि विटामिन सी से भी भरपूर होते हैं। यह विटामिन आपकी प्रतिरक्षा प्रणाली को बढ़ावा देने और आपकी त्वचा को सूरज की क्षति से बचाने के लिए महत्वपूर्ण है।

4. हल्के और दुबले प्रोटीन

दुबले प्रोटीन स्रोतों जैसे ग्रिल्ड चिकन, मछली, या पौधे-आधारित प्रोटीन जैसे टोफू और फलियाँ चुनें। ये प्रोटीन पचाने में आसान होते हैं, जिससे आप पूरे दिन हल्का और ऊर्जावान रहते हैं।

5. दही से रहें कूल

दही प्रोबायोटिक्स और कैल्शियम का एक शानदार स्रोत है। पाचन में सहायता करने और स्वस्थ आंत माइक्रोबायोम को बढ़ावा देने के लिए नाश्ते के रूप में या स्मूदी में इसका आनंद लें। अतिरिक्त स्वाद के लिए ताजे फल डालें।

6. फ्रोजन ट्रीट

फलों के पॉप्सिकल्स या फ्रोजन दही जैसे घर के बने फ्रोजन ट्रीट से गर्मी को मात दें। ये न केवल आपकी मीठे की चाहत को संतुष्ट करते हैं बल्कि गर्मी के दिनों में ठंडी राहत भी देते हैं।

7. सतत ऊर्जा के लिए साबुत अनाज

निरंतर ऊर्जा प्रदान करने और आपको भरा हुआ महसूस कराने के लिए क्विनोआ, ब्राउन चावल और साबुत गेहूं जैसे साबुत अनाज चुनें। ये अनाज फाइबर से भरपूर होते हैं, पाचन में सहायता करते हैं और स्वस्थ चयापचय को बढ़ावा देते हैं।

8. जड़ी-बूटियाँ और मसाले

अपने भोजन में पुदीना, तुलसी और सीताफल जैसी जड़ी-बूटियाँ शामिल करें। ये न केवल स्वाद बढ़ाते हैं बल्कि इनमें ठंडक देने वाले गुण भी होते हैं, जो इन्हें गर्मियों के व्यंजनों के लिए उपयुक्त बनाते हैं।

9. प्रसंस्कृत और शर्करा युक्त खाद्य पदार्थों को सीमित करें:

प्रसंस्कृत और शर्करा युक्त खाद्य पदार्थों का सेवन कम से कम करें, क्योंकि वे निर्जलीकरण और सुस्ती का कारण बन सकते हैं। इसके बजाय, अपने मीठे दाँत को संतुष्ट करने के लिए फलों से मिलने वाली प्राकृतिक मिठास पर ध्यान दें।

10. हाइड्रेटेड रहें

भोजन के अलावा, भरपूर पानी से हाइड्रेटेड रहना याद रखें। अतिरिक्त कैलोरी के बिना अतिरिक्त स्वाद के लिए खट्टे फलों, खीरे, या पुदीने के स्लाइस के साथ पानी डालें।

इन पौष्टिक खाद्य पदार्थों को अपने ग्रीष्मकालीन आहार में शामिल करके, आप न केवल एक स्वस्थ जीवन शैली को बढ़ावा देते हैं, बल्कि इस मौसम में मिलने वाले जीवंत स्वादों को भी अपनाते हैं। इष्टतम स्वास्थ्य के लिए अपने शरीर को पोषण देते हुए गर्मियों के भरपूर आनंद का आनंद लें।

चिकित्सा बीमा योजना

- करुणेश चतुर्वेदी, ग्वालियर

महासभा कार्यसमिति की बैठक में कई बार सामाजिक बांधवों के चिकित्सा में होने वाली बेहिसाब खर्चों से बचने के लिए ग्रुप मेडिकलेम' काल की पॉलिसी के विषय में व्यापक चर्चा चहा रही है। इस पर काफी जानकारी एकत्रित कर करौली बैठक में सभी कार्यकारिणी सदस्यों को इसके बारे में विस्तृत विवरण प्रस्तुत किया गया। आज के दौर में सभी मध्यम वर्गीय परिवार के पारिवारिक बजट की कमर चिकित्सा और शिक्षा के असीमित खर्चों में लोड के सूची है। चिकित्सा सम्बंधी खर्चों से आर्थिक स्थिति को असंतुलित कर देता है। इससे बचने के लिए हम अपनी चिकित्सा बीमा करवा लें तो आने वाले वित्तीय संकट के असंतुलन से बचा जा सकता है। इसी सामाजिक समस्या के समाधान हेतु महासभा अपनी कार्यसमिति में इस पर मंथन करती आ रही है। उसको कार्यरूप की परिणीति करने में आप सभी बांधवों का सहयोग अपेक्षित है, जिससे हम अपने इस लक्ष्य को हासिल कर सकें। बीमा सम्बन्धी जानकारी पर कुछ प्रकाश डाल रहा हूँ, आशा है इससे बांधव अवगत हो अपना अमूल्य सुझाव एवं सहयोग साझा कर इस महायज्ञ को पूर्ण करने में सहायक होंगे।

ग्रुप मेडिकल पॉलिसी

- 10 कम से कम 100 व्यक्तियों का समूह।
- 2) इस पॉलिसी में मातृत्व चिकित्सा सुविधा भी कवर जाता है।
- 3) बीमा राशि-बीमा कम्पनी हो, आपसी बातचीत से निर्धारित की जा सकती है।
- 4) पॉलिसी में मिलने वाली सुविधा (कवरेज) यह भी बीमा



- कम्पनी से आपसी सहमति से की जा सकती है।
- 5) बीमा पूर्व की बीमारी (श्री एक्सिस्टिंग डिजीज) कवरेज- यह भी बीमा कम्पनी से आपसी सहमति से निर्धारित की जा सकती है।
 - 6) अधिभार (लोडिंग)/ दूर (डिस्काउंट). यह चिकित्सा दावों के ओकितन पर निर्भर है।
 - 7) इस योजना में सभी आयु वर्ग के लोगों को सम्मानित किया जा सकता है? इसके अतिरिक्त युवा भारत चिकित्सा बीमा? सम्बन्धी योजना भी है, इस योजना में कीमा राष्ट्र (जनियय) अपेक्षाकृत कम है, मगर इसमें 18 वर्ष से 45 वर्ष के आयु वर्ग वाले ही सम्मिलित हो सकते हैं। इस योजना में तीन श्रेणी हैं 0 बेसिक गोल्ड एवं 3 प्लेटेनियम है, जिसमें प्रीमियम बीमा राशि अनुसार श्रेणी एवं सुविधा प्राप्त की जा सकती है। उपरोक्त सभी लक्ष्यों पर गौर करने के उपरांत सहमति बने कि. - योजना को स्वीकार किया जा सके एवं अपने कार्य को अंजाम घर पहुंचाया।

गर्मियों में हृदय का ख्याल रखना जरूरी है.....

डॉ हेमन्त चतुर्वेदी

FRCP London, FACC वरिष्ठ हृदय रोग विशेषज्ञ

एटरनल हॉस्पिटल, जयपुर

विशेषज्ञ कहते हैं कि गर्म मौसम में हमें खुद को कूल रखने पर ध्यान देना चाहिए। यह हमारे अंदरूनी अंगों (Internal organ) के लिए बहुत जरूरी है। खासतौर से हार्ट हेल्थ (Heart health) के लिए। असल में गर्मी बढ़ने के साथ हीट स्ट्रोक (Heat stroke) से लेकर हाइपरटेंशन (Hypertension) तक की समस्या बढ़ने लगती है। और यह आगे चलकर हार्ट अटैक (Heart attack) और कार्डियक अरेस्ट (Cardiac arrest) का भी कारण बन सकता है।

हैरान हैं, पर यह सच है कि गर्मी का मौसम भी आपके दिल के लिए दुश्वारियां ला सकता है। इसलिए जानें कि इस गर्म मौसम में आप अपनी हार्ट हेल्थ को कैसे दुरुस्त बनाए रख सकती हैं।

क्या है दिल और गर्मी का कनेक्शन

अमेरिकन हार्ट एसोसिएशन की प्रमुख जर्नल सर्कुलेशन में एक शोध के मुताबिक गर्मी जैसे-जैसे बढ़ती है दिल की बीमारी से जूझ रहे लोगों में मृत्यु का आंकड़ा बढ़ने लगता है। इतना कि सामान्य दिनों की तुलना में यह संख्या दोगुनी या तिगुनी भी बढ़ सकती है। वहीं अमेरिकन स्ट्रोक एसोसिएशन की स्टडी बताती है कि तापमान में बढ़ोत्तरी होने पर हार्ट स्ट्रोक के खतरे बढ़ जाते हैं। में मौजूद ब्लड के पानी को स्किन के जरिए पसीने के रूप में बाहर निकाल देता है। पसीना निकलने पर हम थोड़ी ठंडक महसूस करते हैं, लेकिन ज्यादा पसीना निकलने से हमारे शरीर के ब्लड में पानी की मात्रा कम हो जाती है। अब इस ब्लड को शरीर में प्रवाहित कराने के लिए हमारे दिल को ज्यादा मेहनत करनी पड़ती है। जिसके चलते दिल का स्ट्रेस बढ़ जाता है। और यह स्ट्रेस उसके जोखिम को और बढ़ा देता है। गर्मी में सोडियम और पोटेशियम की कमी की वजह से कुछ लोगों के हार्ट फंक्शन में बदलाव होता है। इसकी वजह से दिल की धड़कन अनियमित हो सकती हैं।

गर्मियों में दिल को दुरुस्त रखने के लिए अपनाएं पांच उपाय

दिल के मरीजों के लिए बढ़ते खतरे को देखते हुए अमेरिकन हार्ट एसोसिएशन ने एहतियात के तौर पर पांच उपाय बताए हैं। चिलचिलाती धूप और बढ़ती उमस में हर किसी को इन उपायों को अपनाने की जरूरत है।

1. घर से बाहर निकलने के समय का ध्यान रखें

तपती गर्मी में घर से बाहर निकलना यानी खुद अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मारने जैसा है। इस मौसम में लू लगने के साथ-साथ दिल के लिए भी खतरा बढ़ जाता है। इससे बचने के लिए चिलचिलाती धूप में घर से बाहर निकलने से परहेज करें। जरूरी हो तो बाहर निकलने के लिए दोपहर बाद 3 बजे से 4 बजे के बाद का समय ही चुनें।

2. कपड़ों और सेप्टी गियर का खास ख्याल रखें

ऐसे कपड़ों को पहने जिनका रंग और वजन हल्का हो, जैसे सूती कपड़े। उन कपड़ों को पहनें जो शरीर से पसीने को दूर करने में बाधित न करें। आंखों की सुरक्षा के लिए धूप के चश्मे, चेहरे सहित शरीर के बाकी हिस्सों के बचाव के लिए सिर पर टोपी पहनें। घर से बाहर निकलने से पहले, कम से कम सन प्रोटेक्शन फैक्टर 15 सनस्क्रीन से स्किन को कवर करें, और हर दो घंटे में इसे दोहराएं। ऐसा करने से शरीर में पानी की मात्रा बनाए रखने में मदद मिलेगी।

3. हाइड्रेटेड रहें

घर से बाहर निकलने से पहले पर्याप्त पानी पीकर निकलें। साथ ही पानी की बोतल अपने साथ लेकर जाएं। ऐसा एक्सरसाइज करने से पहले और बाद में भी करें। कैफीन युक्त या एल्कोहॉल युक्त पेय लेने से परहेज करें।

4. बीच बीच में ठहरें

इस मौसम में जब भी घर से बाहर निकलें निश्चित अंतराल के बाद बीच-बीच में छायादार जगहों पर रुकें, आराम करें और पानी भी लें।

5. दवा लें

अगर आपको लगता है कि आपको गर्मी के कारण हृदय गति बढ़ने या कम होने की समस्या हो रही है, तो तुरंत किसी डॉक्टर से सलाह लें। हृदय स्वास्थ्य के लिए किसी भी तरह की लापरवाही आपको भारी पड़ सकती है।

बट वृक्ष की छाया चली गयी

- रविंद्र नाथ चतुर्वेदी(होलीपुरा) कोलकाता

जिस बट वृक्ष की छाया में हम बहन भाई पोषित होकर पढ़े लिखे तथा स्वावलंबी बने। वह बट वृक्ष 31 जनवरी दोपहर 12:00 अपनी शीतल छाया समेट कर अनंत आकाश में चला गया। हमारा परिवार उसे शीतल छाया से वंचित हो गया। वह बट वृक्ष मेरे बड़े भाई श्री जसवंत सिंह जिन्हें लोग प्रेम से श्रीनाथ के नाम से जानते थे। 5 जून 1936 को स्वर्गीय श्री रामस्वरूप चतुर्वेदी एवं स्वर्गीय श्रीमती रुक्मिणी देवी के यहाँ लाहौर में प्रथम पुत्र के रूप में जन्म लिया था। लाहौर में हमारा परिवार एक संपन्न परिवार था। हम लोग सात बहन भाई थे। आजादी के समय जब हिंदुस्तान और पाकिस्तान का बंटवारा हुआ इस समय हम लोग भी लाहौर में अपना सब कुछ छोड़कर अपने पैतृक गाँव होली पुरा आ गए।

लाहौर छोड़कर होलीपुरा आने पर परिवार की आर्थिक स्थिति डावाँडोल हो गई क्योंकि सब कुछ लाहौर में छूट गया था। भाई साहब की शिक्षा कक्षा बारहवीं तक होलीपुरा के दामोदर इंटर कॉलेज में हुई। 16 वर्ष की अल्प आयु में आप कोलकाता चले गए तथा वही स्नातक तक अध्ययन किया साथ में परिवार को आर्थिक सहयोग देने के लिए आप विद्यार्थियों को ट्यूशन पढ़ाने लगे। अध्ययन पूरा करने के बाद आप सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया में कार्यरत हो गए। तथा सन 1996 में वहाँ से सेवानिवृत्त हुए।

भाई साहब का विवाह-1963--- श्रीमती जगदंबा चतुर्वेदी पुत्री स्वर्गीय, रामप्रसाद जी

जमुआ रामगढ़(राजस्थान) के साथ हुआ। आपके तीन पुत्रियाँ श्रीमती रश्मि फिरोजाबाद श्रीमती मनीषा (पुरा)

भोपाल एवं श्रीमती श्रीमती मीता कछपुरा कानपुर है। कोलकाता में एक छोटे से मकान में हम संयुक्त परिवार के रूप में रहते। वह मेरे पुत्र जलज खगेश एवं मेरी पुत्रियाँ अदिति एवं रीता से बहुत प्रेम एवं स्नेह रखते थे। मुझे उन्होंने हमेशा पुत्रवत् स्नेह दिया। मेरी पत्नी मृदुला को पुत्रवधू के रूप में स्नेह दिया।

कोलकाता में सभी चतुर्वेदी हमें राम और लक्ष्मण के नाम से जानते थे। पिताजी की मृत्यु के बाद हम लोगों की माँ कोलकाता

साथ में ही रही। पिताजी के सामने एक बहन की शादी हुई थी शेष बहनों की शादी

सबको शिक्षित करने के बाद की एवं पुत्रीयों का विवाह संपन्न कराया। धार्मिक प्रवृत्ति के होने के कारण आप नियमित रूप से भूतनाथ मंदिर घर से पैदल जाते थे। एवं पितृ पक्ष में अपने पितरों को पानी देने के लिए सुबह 4:00 गंगा जी पैदल ही जाते थे। सेवानिवृत्त होने के बाद आप कुछ समय तक बिडन स्ट्रीट में रहे उसके उपरांत अपने निजी निवास बागुईहाटी में निवासरत हो गए। शारीरिक रूप से अस्वस्थ होने के कारण आपने आना जाना कम कर दिया था।

स्थान परिवर्तन करने के लिए आप अपनी मझली पुत्री के पास भोपाल आगये। तथा भोपाल से अपनी बड़ी पुत्री के लड़के के सगाई एवं विवाह समारोह में सम्मिलित हुए। इस समय कोरोना ने अपना कहर बरपाया। इस कारण आप वापस लौटकर कोलकाता नहीं आ पाए। तथा भोपाल में ही अपनी पुत्री मनीषा के पास रहने लगे।

मनीषा का भी संयुक्त परिवार है। डॉ दिवाकर नाथ चतुर्वेदी एवं श्री भरत चतुर्वेदी सभी एक साथ रहते हैं इस कारण परिवार में सदस्यों की संख्या अधिक होने के कारण उनका मन लग गया। हम उम्र होने के कारण डॉक्टर दिवाकर नाथ चतुर्वेदी से घनिष्ठता हो गई। तथा बड़े आदर व सम्मान से परिवार के सदस्य के रूप में वह वहां रहे जिस कारण उन्हें अपने परिवार की कमी महसूस नहीं हुई। हमारी भाभी उन्हीं के साथ भोपाल में थी। उनके अंतिम संस्कार में उनकी तीनों पुत्रियाँ एवं उनके पुत्र पुत्रियाँ तथा भतीजे उनके अंतिम इच्छा के अनुरूप शामिल हुए। उनकी इच्छानुसार मेरे पुत्र मनीष ने अंतिम संस्कार किया। सीधे सरल दिखावे से दूर धार्मिक भावना से उत्प्रात ऐसे थे हम सब डॉक्टर दिवाकर नाथ श्री भरत चंद एवं श्रीमती उषा जी का अभिनंदन करते हैं कि उन्होंने हमारे ददा को अपनात्व एवं सम्मान दिया हमारे बड़े भाई स्वर्गीय श्री नाथ जी।

समस्त परिवार उनकी आत्मा की शांति की प्रार्थना करता है।

रविंद्र नाथ चतुर्वेदी होली पूरा कोलकाता

(र.क्र.2133)



डाक्टर अशोक चतुर्वेदी (1941 -2023)

हमारे मार्गदर्शक हमारे अग्रज
नम आंखों से हम श्रद्धांजलि देते बार बार
आपकी स्नेहिल छवि याद आती है हर बार
रूठ कर अपनों से इस तरह कोई जाता है
आप ऐसे गए पलट कर न देखा एक बार

फिर मार्च का महीना आने वाला है होली भी आएगी और होली की भाई दूज भी, पर पिछले बार की भाई दूज बहुत कुछ हमसे छीन कर ले जा चुकी है। पिछली भाई दूज पर भाई साहब ने लरजते शब्दों में कहा था, ₹ टीका कर दोर। वे भी जानते थे, मैं भी जानती थी कि उनके मस्तक पर लगने वाला यह आखिरी टीका होगा, क्योंकि लंबे समय से बीमार चलने वाले हमारे भाई अपनी जिजिविषा से हार रहे थे। जाते-जाते हुए पूरे होशो हवास में थे, बस उनकी वाणी अधिक साथ नहीं दे पा रही थी वह मार्मिक क्षण, 9 मार्च 2023 की काल रात्रि अविस्मरणीय बनकर हमारी स्मृतियों में रह गई है। समय-समय पर जो मार्गदर्शन करते थे, हौसला बढ़ाते थे, वे अनंत में विलीन हो चुके हैं। क्रूर काल ने हमारे भाई को छीन लिया, एक वर्ष बीत गया है फिर भी यह एहसास हमेशा बना रहता है कि वह यही कही है, हमारे आसपास है उनका आशीर्वाद हमारे साथ है।

भाई साहब एक कुशल चिकित्सक होने के साथ-साथ कुशल प्रशासक थे। जहां एक ओर उनकी उंगलियां शल्य क्रियाएं निपटाती थी तो दूसरी ओर वे संवेदनशील कलाकार थे। आपके बनाए हुए व्यंग्य चित्र इस बात के सजीव उदाहरण हैं। अपने परिवेश से उपजे व्यंग्य आपके कार्टूनों में नजर आते हैं। आपका बहुआयामी व्यक्तित्व था। आप एक कुशल फोटोग्राफर होने के साथ साथ विनम्र, मितभाषी, संवेदनशील थे। आपका जाना हमारे लिए अपूर्णीय क्षति बन गया है। आप सदैव हमारी स्मृतियों में जीवंत रहेंगे।

आदरणीय भाई साहब को सादर नमन।

शोकाकुल

पत्नि- श्रीमती नर्मदा चतुर्वेदी।

बहिन - श्रीमती कुमुद चतुर्वेदी, श्रीमती सुबोध चतुर्वेदी

भांजे, बहू

निखिल, शिखा, मुकुल, राखी

हिमांशु, शालिनी, राहुल, साक्षी।

भांजी, दामाद

अर्चना, मोहिल, आरती, प्रदीप, वंदना, संजय, आभा, अमित

(र.क्र.20119)



शाखा समाचार

जयपुर

आवश्यक सूचना : श्री माथुर चतुर्वेदी युवा सभा, जयपुर के द्वारा क्रिकेट टूर्नामेंट 2024 का आयोजन हर्ष के साथ सूचित किया जाता है कि श्री खोले के हनुमान जी के आशीर्वाद एवं युवा सभा के संस्थापक अनंत श्री विभूषित पंडित श्री राधेलाल जी चौबे जी की प्रेरणा से श्री माथुर चतुर्वेदी युवा सभा जयपुर द्वारा आगामी माह में क्रिकेट प्रतियोगिता आयोजित करने का निर्णय लिया गया है। क्रिकेट प्रतियोगिता का मूल उद्देश्य श्री माथुर चतुर्वेदी जयपुर के समाज के ज्यादा से ज्यादा युवाओं को जोड़ने का है। प्रतियोगिता को व्यवस्थित रूप से संपन्न करने के उद्देश्य से एक गूगल फॉर्म संलग्न किया जा रहा है। समाज के जो भी युवा प्रतियोगिता में भाग लेना चाहते हैं वे इस गूगल फॉर्म में अपनी जानकारी दिनांक 20.2.2024 तक साझा करने का कष्ट करें।

साथ ही नीचे दिए गए मो. / whatsapp पर अपनी सहमति प्रदान करें।

श्री अरुण चतुर्वेदी, वैशाली नगर, मो. 9828016864

श्री रवि चतुर्वेदी, ब्रह्मपुरी, मो. 9358446953

श्री रविन्द्र चतुर्वेदी, वैशाली नगर, मो. 9414842914

प्रतियोगिता जयपुर के क्रिकेट ग्राउंड पर फरवरी अथवा मार्च के किन्हीं 2 रविवारों को आयोजित होगी एवं ट्रॉफी का वितरण होली मिलन समारोह पर किया जाएगा। अतः सभी युवा बांधवों से निवेदन है कि अधिक से अधिक संख्या में पंजीकरण करें एवं प्रतियोगिता को सफल बनाएं।

सादर

अभिनव चतुर्वेदी, मो. 9983320712

श्री माथुर चतुर्वेदी युवा सभा, जयपुर

सूचना

दामोदर इंटर कॉलेज के भूतपूर्व छात्रों के संगठन (ICAA) को पुनर्गठित करने के लिए प्रारंभ किए गये प्रयासों को मूर्ति रूप देने के लिए होली के अवसर पर 26 मार्च 2024 को प्रातः 11 बजे से 12:30 तक, एक चिंतन बैठक का आयोजन, होलीपुरा ग्राम में किया जा रहा है।

सभी भूत पूर्व छात्रों से निवेदन है इस अवसर पर बैठक में सम्मिलित होकर अपने अमूल्य तथा सारगर्भित सुविचारों/ सुझावों से अवगत करा कर, DICAA बनाने के विचार को धरातल पर परिवर्तित कराने में सहयोग देने की कृपा करें।

अपने इस आयोजन में सम्मिलित होने की अग्रिम सूचना करेंगे, तो व्यवस्था में सुगमता रहेगी।

मुनीन्द्र नाथ चतुर्वेदी

9871170559

अशोक चतुर्वेदी

97116 87405

आगरा

आज दिनांक 11/02/2024 को श्री माथुर चतुर्वेदी सभा



रजिस्टर्ड द्वारा मोक्षधाम ताजगंज आगरा पर वाटर कूलर के सामने टूटी हुई जाली को स्टील की जाली से परिवर्तित किया जिसमें कार्यकारिणी के सक्रिय सदस्य भाई मनीष द्वारा पूर्ण सहयोग दिया गया जाली का लोकार्पण नारियल फोड़ कर किया गया सभा में आगरा सभा के अध्यक्ष मुकेश चतुर्वेदी महामंत्री श्री राकेश पाठक जी उपाध्यक्ष श्री राजीव जी धन कुबेर रोहित सोनू जी मीडिया प्रभारी अमित पांडे जी युवा मंच के पूर्व अध्यक्ष आशीष जी अरुण जी विधि प्रकोष्ठ मधुकर पाठक पूर्व मंत्री युवामंच रोहित जी प्रदीप लालन जी निखिल जी ने मुक्त कंठ से मनीष जी की प्रशंसा की भाई मनीष जी ने भविष्य में भी होने वाले कार्यक्रम में पूर्ण सहयोग देने का वचन दिया अंत में राकेश पाठक जी ने सभी

को धन्यवाद दिया जिसके पश्चात सभा का समापन किया गया पालागन

मुकेश चतुर्वेदी, अध्यक्ष

राकेश पाठक, महामंत्री

श्री माथुर चतुर्वेदी सभा आगरा रजिस्टर्ड आगरा

गाजियाबाद

श्री माथुर चतुर्वेदी शाखा सभा गाजियाबाद

दिनांक 18 फरवरी 2024 मीटिंग

रविवार 18 फरवरी को होली मिलन 2024 की रूपरेखा तय करने के लिए कार्यकारिणी की मीटिंग शाखा सभा के सभापति श्री धर्मेन्द्र चतुर्वेदी जी (मुन्ना) के आवास पर हुई। मीटिंग का शुभारंभ श्री गोपाल जी द्वारा गणेश वंदना गाकर किया गया, तत्पश्चात पिछले होली मिलन की आख्या सचिव श्री अभय चतुर्वेदी द्वारा प्रस्तुत की गई। इसके पश्चात कोषाध्यक्ष श्री मणि चतुर्वेदी द्वारा सभा के कोष से संबंधित रिपोर्ट प्रस्तुत की गई।

होली मिलन के कार्यक्रम की रूपरेखा, कार्यक्रम स्थल एवं जलपान के विषय में सदस्यों ने अपने अमूल्य सुझाव द्वारा निर्णय किया। होली मिलन कार्यक्रम 17 मार्च 2024 को लाजपत नगर साहिबाबाद सामुदायिक केंद्र में करना निर्धारित किया गया। कार्यक्रम में भोजन टेंट आदि की व्यवस्था गौरव चतुर्वेदी जी को सौंपी गई। टेंट की व्यवस्था पिछले कुछ आयोजनों के तरह इस बार भी गौरव चतुर्वेदी जी (माखन भोग) ने प्रायोजित करना स्वीकार किया इसके अलावा उनके यहां पुत्र के जन्म की खुशी में उन्होंने होली मिलन के कार्यक्रम में अपनी ओर से तीन प्रकार की कुल्फी की व्यवस्था करने की बात कही।

मीटिंग में सभा के समुचित फंड कलेक्शन के लिए नीति तय करने का विचार रखा गया, इसके अतिरिक्त गाजियाबाद क्षेत्र की डायरेक्टरी छापने का प्रस्ताव भी सभा में रखा गया जिसके लिए एक कमेटी गठित की गई जिसके सदस्य हैं एडवोकेट श्री वी एन चतुर्वेदी, श्री ज्ञानेंद्र जी, श्री प्रदीप जी (संजू) तथा श्री गौरव जी, श्री नीरद जी, श्री गोपाल जी हैं। सभा की अगली कार्यकारिणी मीटिंग श्री नीरद चतुर्वेदी जी ने उनके घर पर करना प्रस्तावित किया।

नई कार्यकारिणी और पदाधिकारियों के चुनाव का प्रस्ताव भी मीटिंग के दौरान रखा गया एवं ज्ञानेंद्र जी ने शाखा सभा के बैंक अकाउंट को खुलवाने का प्रस्ताव रखा और इस क्रम में अपना सहयोग देने की बात कही। अंत में सभा के संयोजक एडवोकेट श्री चतुर्वेदी ने सभापति श्री धर्मेन्द्र चतुर्वेदी जी (मुन्ना) को मीटिंग बुलाने एवं जलपान की व्यवस्था के लिए धन्यवाद दिया। श्री दीपक मिश्रा जी, श्रीमती उषा जी पत्नी पवन चतुर्वेदी (गोलू),

उर्मिला जी, श्रीमती सावित्री जी पत्नी रमाकांत चतुर्वेदी, करुणेश चतुर्वेदी जी, शैलेंद्र चतुर्वेदी जी (बच्चा जी), सिद्धो देवी जी माता जी श्री रोहित चतुर्वेदी को सभी सदस्यों ने श्रद्धांजलि दी।

सचिव

गाजियाबाद शाखा सभा

अभय चतुर्वेदी, 9654870411

गुरुग्राम

बन्धुवर पालागन

श्री माथुर चतुर्वेदी सभा गुरुग्राम

द्वारा आयोजित होली मिलन समारोह में आप सभी सपरिवार सादर आमंत्रित है

कार्यक्रम :

अपनी सांस्कृतिक विरासत होली गायन , अतिथियों का सम्मान , सामूहिक भोज

दिनांक / स्थान :

17 मार्च 2024 (रविवार) प्रातः 11 बजे से / कार्यक्रम स्थल - सेक्टर 15, पार्ट-II, कम्युनिटी सेंटर, अहमद हॉस्पिटल के पीछे, गुरुग्राम

विशिष्ट अतिथि :

श्री मती ऊषा चतुर्वेदी - नवनिर्वाचित अध्यक्ष श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा

मुख्य अतिथि:

श्री शशांक चतुर्वेदी - सम्पादक चतुर्वेदी चंद्रिका

सहित कई अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहेंगे।

आप सभी की समय से सपरिवार गरिमामयी उपस्थिति सादर अपेक्षित है

अखिलेश चतुर्वेदी

अध्यक्ष

9818682458

अभय राज चतुर्वेदी

सचिव

9999161818

मनोज चतुर्वेदी

कोषाध्यक्ष

8700644012

समाज समाचार

- वि. पुलकित सुपुत्र श्रीमती मनीषा एवं शशांक चतुर्वेदी सुपौत्र स्व. श्रीमती माया देवी एवं प्रह्लाद चन्द्र चतुर्वेदी (चंद्रपुर/प्रतापगढ़) का शुभ विवाह सौ. अदिति सुपुत्री राजेश्वरी एवं श्री संतोष चतुर्वेदी सुपौत्री स्व. शकुंतला जी एवं शिवकुमार चतुर्वेदी (करौली/जयपुर) के साथ दिनांक 28-11-2023 को जयपुर में सानंद संपन्न हुआ। इस अवसर पर श्री शशांक जी ने महासभा सहायतार्थ 1100/- एवं पत्रिका सहायतार्थ 500 प्रदान किये। (र.क्र.2076)
- मोहित चतुर्वेदी सुपुत्र श्रीमती अनामिका - श्री सुदेश चतुर्वेदी सुपौत्र श्रीमती पुष्पा चतुर्वेदी एवं स्व. श्री कौशलेंद्र नाथ जी चतुर्वेदी (कोठी कैस्त, जसवंत नगर/ जयपुर) की हाल ही में EY India Ltd कंपनी में सीनियर एनालिस्ट के पद पर नियुक्ति हुई। इस अवसर पर अपने पत्रिका सहायता 1001/- रुपए प्रदान किये। बधाई। (र.क्र. -2060)
- श्री मनीष कुमार एवम श्रीमती निधी चतुर्वेदी ने अपने भतीजे दीपांशु पुत्र श्री लोकेंद्र नाथ (फरौली/गाजियाबाद) के जन्मदिन के उपलक्ष्य में महासभा सहायतार्थ ५,१००/- तथा चतुर्वेदी चंद्रिका सहायतार्थ ५,१००/- प्रदान किए। संयोग वश चि. दीपांशु ने मास्टर्स (विज्ञान) in Environment



Studies and Resource Management from TERI School of Advanced Studies की मास्टर्स डिग्री प्राप्त होने की - बधाई।

- कु. प्रशंसा चतुर्वेदी सुपुत्री श्री भुवनेश कु.चतुर्वेदी ने सी. ए. फाइनल एग्जाम की परीक्षा (नव. 2023) सफलता पूर्वक पास की। 09.01.2024 को रिजल्ट आया था। इस अवसर पर आपने पत्रिका सहायतार्थ 1100/- प्रदान किये।
- श्रीमती सरला चतुर्वेदी पत्नी स्व० बुद्धिप्रकाश चतुर्वेदी जी बेलनगंज, आगरा का स्वर्गवास दिनांक 23/02/2024 को हो गया। आप आगरा भाजपा पार्षद दल के मुख्य सचेतक अनुराग जी की माताजी थी।
- सुश्री गौरांशी चतुर्वेदी सुपुत्री मुकेश चतुर्वेदी सुपौत्री स्व. श्री शिव प्रसाद चतुर्वेदी आज सी एम ए (Cost and Management Accountant) बन गई है। उसने आल इंडिया रैंकिंग में 39 स्थान प्राप्त किया है। बधाई।



बिछड़े स्वजन

- * श्री अरविंद चतुर्वेदी पुत्र स्वर्गीय श्री फूल चंद चौबे (जयपुर) का देहावसान दिनांक 11 फरवरी 2024 को हो गया।
- * श्री दीनदयाल चतुर्वेदी पुत्र स्व. श्री रमेश प्रसाद चतुर्वेदी (करौली/ कोटा) का स्वर्गवास दिनांक 12.02.24 को हो गया।
- * श्रीमती श्रेष्ठा चतुर्वेदी पत्नी श्री देवेंद्र चतुर्वेदी (मैनपुरी/आगरा) का आगरा में निधन हो गया।
- * श्रीमती सविता चतुर्वेदी पत्नी श्री रमाकांत चतुर्वेदी (भरतपुर/नोएडा) का स्वर्गवास दिनांक 15 फरवरी को हो गया।
- * श्री शैलेन्द्र नाथ चौबे (बच्चा बाबू) का वाराणसी में अभी स्वर्गवास हो गया।
- * श्री राजीव चतुर्वेदी (रिटायर्ड सी.एस.पी.) (मैनपुरी/भोपाल) का देहावसान दिनांक 17/02/2024 को अभी शाम 6.30 बजे हो गया था।
- * श्री दीनदयाल चतुर्वेदी पुत्र स्व. श्री रमेश प्रसाद चतुर्वेदी (करौली/ कोटा) का स्वर्गवास दिनांक 12.02.24 को हो गया।
- * श्रीमती श्रेष्ठा चतुर्वेदी पत्नी श्री देवेंद्र चतुर्वेदी (मैनपुरी/आगरा) का आगरा में निधन हो गया।
- * श्रीमती सरला चतुर्वेदी पत्नी स्व० बुद्धिप्रकाश चतुर्वेदी जी बेलनगंज, आगरा का स्वर्गवास दिनांक 23/02/2024 को हो गया। आप आगरा भाजपा पार्षद दल के मुख्य सचेतक अनुराग जी की माताजी थी।
- * श्री मनोज जी तरसोखर/कानपुर का निधन कानपुर में हो गया है ईश्वर दिवंगत आत्मा को शांति प्रदान करे, ओम शांति ओम शांति ओम शांति

महासभा एवं चतुर्वेदी चंद्रिका परिवार दिवंगत आत्माओं की शांति के लिए ईश्वर से प्रार्थना करते हैं।

अश्रुपूरित श्रद्धांजलि



श्रीमती सविता चतुर्वेदी

(1953 – 2024)

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः।

न चौनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः॥

श्रीमद् भगवद्गीता 2.23॥

शस्त्र इस आत्मा को काट नहीं सकते, अग्नि इसको जला नहीं सकती,
जल इसको गीला नहीं कर सकता और वायु इसको सुखा नहीं सकती।

हमारे परिवार की सबसे सशक्त कड़ी इस शाश्वत शरीर को छोड़ कर प्रभू चरणों में विद्यमान हुई।

शोकाकुल

रमाकांत चतुर्वेदी (पति)

(भरतपुर-निवासी -- नोएडा-प्रवासी)

पता- एम-5, सेक्टर 25, नोएडा, उत्तर प्रदेश।

मोबाइल : 9211434379

शशिकांत – नीलम (देवर – देवरानी)

अमित – श्वेता (बेटा – बहू)

पूर्णा – अतिन जी (बेटी – दामाद)

पुनीत-रुचि, मुदित, देव, तुष्टि, वेधा, कार्तिक, अर्णव



जन्म 4.1.1954 – निधन 27.1.2024

हमारे प्रेरणास्रोत सुप्रसिद्ध समाज सेवी बहुमुखी प्रतिभा के धनी

स्व. अशोक चतुर्वेदी

सुपुत्र स्व. विमला देवी – स्व. मुन्नालाल चतुर्वेदी
(कछपुरा/कलकत्ता/पूना)

असामयिक गोलोकवास पूना में हो गया। आपकी पावन स्मृति को हमारा शत् शत् नमन।

श्रद्धावनत

- पत्नी – ऊषा चतुर्वेदी
- पुत्र – अंकुर, अंजुल
- बहन-बहनोई – उमा – योगेश, मीना-प्रभाकर
- बहनोई – अरविंद
- अनुज एवं अनुज की पत्नी – मुकेश – निरुपमा
- भतीजा-तेजस – भतीजी- अतिका
- भानजे – प्रफुल्ल, देवेश, अभिषेक, वैभव, अनुभव, अंबुज
- भानजी – रंजना, रश्मि, गरिमा
- चाचा – रमाकांत, किशन कान्त, बुआ –शोभा
- एवं समस्त ठाकुरदास परिवार कछपुरा

दुःखी हूं निशब्द हूं स्तब्ध हूं
भावपूर्ण विनम्र श्रद्धांजलि



स्वर्गीय यतींद्र नाथ मिश्र

जन्म : 02.02.1944, गोलोक गमन : 09.01.2024

(KAMPIL / SARITA VIHAR NEW DELHI) सुपुत्र स्व जयगोपाल मिश्र एवम गंगा देवी मिश्र (मैनपुरी)
चलते चलते न जाने कब वो अपनी राह मुड़ गए और उनका वह मुस्कुराता चेहरा हमें हमेशा के लिए अलविदा कह गया, अब तो पीछे रह गई है बस उनकी यादें ।

अश्रुपूरित श्रद्धा नमन

पत्नी रीता मिश्र

पुत्री एवं दामाद : स्वाति और कुशान शेखर

पुत्री दामाद : सुरभि और गौरव चतुर्वेदी

पुत्र : दीपांकर

धेवती : अदिरा

बहन-बहनोई : सविता और भुवनेश चतुर्वेदी (पुरा/बहन कोलकाता)

छोटे भाई : स्व देवेन्द्र मिश्र की पत्नी सागरी मिश्र

बहन : अमिता

बहन-बहनोई : कविता और राजेश चतुर्वेदी (भोपाल)

भाई के पुत्र : दीपेश और दीपेन

एवम समस्त कपील परिवार

हम सब परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत पुण्यात्मा को शांति और मोक्ष प्रदान करें।

निवास : स्थान एफ 407 सरिता विहार, नई देहली – 110076

मो. नंबर – 09999 341508



With Best Compliments From

Ritika Canvasars

Canvassing Agent Paddy, Rice, Pulses Etc.



Rajesh Agrawal

9326215007, 8668741994



Sarang Agrawal

9326032300, 9225232300



Shop No. 2, Pandey Complex, Opp. Punjab National Bank,
Gondia - 441601 (M.S)

e-mail : agrawal.sarang@rediffmail.com

भावपूर्ण श्रद्धांजली

—: जन्म :—
11 मार्च 1945



—: गोलोक गमन :—
21 फरवरी 2024

स्व. श्री ओंकार नाथ चतुर्वेदी (पाण्डे)

होलीपुरा / लखनऊ

शोकाकुल

श्रीमती मंजू चतुर्वेदी (पत्नी)

श्रीमती उर्मिला (भाभी)

श्री अजीत कुमार (भाई) – श्रीमती उमा (भाभी)

श्री सुधीर चन्द्र (भाई)

श्री चिन्तामणि (भाई) – श्रीमती गीता

पुत्र – पुत्रवधु

संजय – संजना

गौरव – अरूणा

सौरभ

नाती – नातिन

प्रतिभा, आर्यन, अपेक्षा, अस्मि

पता :- 237, मानस इन्कलेव, फरीदी नगर, लखनऊ

दूरभाष – 9208807543, 7617047786



श्री शशीकांत चतुर्वेदी ‘ददे’
(चंद्रपुर/आगरा)



अशोक चतुर्वेदी
(कछपुरा/कोलकाता/पूना)

सभापति – श्रीमती ऊषा चतुर्वेदी
मंत्री – श्री मुनीन्द्र नाथ चतुर्वेदी
कोषाध्यक्ष – श्री महेश चन्द्र चतुर्वेदी
संपादक – चतुर्वेदी चंद्रिका शशांक चतुर्वेदी
सदस्य – दिलीप सिकंदरपुरिया
एवं समस्त कार्यकारिणी महासभा